Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आलोक पुस्तकमाला

१०

मतिराम-रत्नावली

महाकवि मतिराम की कविताओं का संग्रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आलोक पुस्तकमाला सं० १०

मतिराम-रत्नावली

Mati Ram - Ratna valee -

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

संकलनकर्ता

शंकरनाथ सुकुल एम० ए०

Shankar nath sukal

SPS
891.431 S 32 M
14449

मुद्रक और प्रकाशक
भारतवासी प्रेस, दारागंज—इलाहाबाद
Bhartwasi Press, Allahabad

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशक
भारतवासी प्रेस,
दारागञ्ज—प्रयाग

14449
acc: no: 14449
Rs 0-12-0

सन् १९४३ 1943
मूल्य ।।।)

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

मुद्रक
प्रतापनारायण चतुर्वेदी
दारागञ्ज—प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मतिराम परिचय

मतिराम त्रिपाठी कश्यपगोत्री कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और और निकवाँपुर, ज़िला कानपुर के निवासी थे। मतिरामजी चार भाई थे—चिंतामणि, मतिराम, भूषण तथा जटाशंकर। किन्तु यह बात निर्विवाद नहीं है। जहाँ मिश्रबन्धु तथा बा० श्यामसुन्दरदास जी इन चारों का भाई होना मानते हैं वहाँ पं० कृष्णबिहारी मिश्र जटाशंकर को इनका भाई मानने के लिये तैयार नहीं है। यही नहीं, यह भी अभी निश्चित नहीं हो पाया है कि भूषण बड़े थे कि मतिराम। मिश्रबन्धु भूषण को बड़ा मानते हैं और पं० कृष्णबिहारी मिश्र मतिराम को। मिश्रबन्धुओं के अनुसार इनका जन्म संवत् १६७४ के लगभग हुआ था, परन्तु पं० कृष्ण- बिहारी मिश्र इनका जन्म संवत् १६६० के निकट बतलाते हैं।

मतिरामजी उन कवियों में से थे जिनकी प्रतिभा के प्रस्फुरण के हेतु किसी न किसी आश्रयदाता का मिलना आवश्यक होता है। सौभाग्य से इनकी नैसर्गिक प्रतिभा के अनुकूल ही इन्हें आश्रयदादा भी मिल गये, अतः इनका जीवन बड़े आनन्द में बीता। इनके लगभग सभी ग्रन्थ किसी न किसी राजा के आदेशानुसार लिखे गये हैं। इनके ग्रन्थों का परिचय इस प्रकार है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१) फूल मञ्जरी

इस छोटे से ६० दोहों के ग्रन्थ की रचना मतिराम जी ने जहाँगीर बादशाह की आज्ञा से की थी। उस समय उनकी अवस्था १८ वर्ष से अधिक न थी। अतः इसको मतिराम जी की पहिली रचना कह सकते हैं। इसके प्रत्येक दोहे में एक फूल का वर्णन है। इसमें शब्दों की मधुरता अच्छी है, पर चमत्कार कम है।

(२) रसराज

इस ग्रन्थ में नायिका-भेद का बड़ा विशद वर्णन है। इस ग्रन्थ की एक बड़ी विशेषता यह है कि मतिराम की सर्वोत्कृष्ट रचना होते हुए भी इसे किसी राजा को समर्पित नहीं किया गया है। कुछ लोग इससे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि रसराज लिखते समय मतिराम किसी राजा के आश्रय में न थे और यह उनकी बुढ़ापे की रचना है। परन्तु ऐसा कहना बहुत युक्तियुक्त नहीं हैं। बुढ़ापे में लोग अधिकांश में विरक्त हो जाते हैं। ८० या ९० वर्ष की अवस्था में ऐसी श्रृङ्गार में शराबोर रचना करना कुछ अस्वाभाविक सा जान पड़ता है। अतः यह कहना उचित समझ पड़ता है कि यह ग्रन्थ मतिराम ने २५ या तीस वर्ष की अवस्था में लिखा होगा जब यौवन की मादक वृत्तियाँ विकास में आई होंगी। आचार्यत्व प्रकट करने की अपेक्षा भावोद्‌गार की ओर ही कवि की प्रवृत्ति अधिक जान पड़ती है। इस ग्रन्थ पर कई टीकाएं भी लिखी गई हैं। संवत् १८२२ में चरखारी के बख्तेश कवि ने रसराज पर टीका लिखी। प्रतापसाहि ने इस पर एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिलक १८९६ में लिखा। संवत १९५० में कवि हरिदान ने एक टीका लिखी।

(३) छंदसार पिंगल

इसकी रचना श्रीनगर के फतेहसाहि बुंदेला के लिये संवत १८०० और १७१० के बीच की गई। मिश्रबन्धु का मत है कि यह महाराज संभुनाथ के लिये बनाया गया। इसका विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है।

(४) ललित ललाम

इस ग्रन्थ में अलंकारों का विवेचन है। यह बूंदी के महाराज भावसिंहजी के लिये १७२० के लगभग रचा गया। इस पर गुलाब कवि ने संवत १९४१ में ललित कौमुदी नाम की टीका भी की। महाराज भावसिंह को यह ग्रन्थ इतना पसन्द आया कि इसके उपलक्ष्य में उन्होंने मतिराम जी को अनेक बहुमूल्य वस्त्र, आभूषण, ४००० रुपये, ३२ हाथी और रिड़ी और चिड़ी दो गाँव दिये। इन महाराज की उदारता, विक्रम तथा इनके हाथियों की विशालता पर मतिराम जी ने अनेक उत्कृष्ट छंद कहे हैं। श्रीमान् पं० कृष्णविहारी मिश्र ने बड़े तर्क से यह सिद्ध किया है कि रसराज पहिले और ललित ललाम बाद में रचा गया है। इसकी आवश्यकता इसलिये पड़ी कि अनेक छंद रसराज तथा ललित ललाम में एक से रूप में ही पाये जाते हैं जिनसे यह संदेह होना स्वाभाविक है कि दोनों में से कौन पहिले लिखा गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५) मतिराम सतसई

यह ग्रन्थ सात सौ दोहों का है। किसी किसी प्रति में ७०४ दोहे भी मिलते हैं। यह भी राज नामक किसी सहृदय नरपति के हेतु रचा गया। मतिराम जी ने भोगनाथ जी की बड़ी प्रशंसा की है—

सुनत सदा गुरु बचन हित, रहत बिबुधगन साथ।
भोगनाथ यह जानियत, सदा भूमि सुरनाथ॥
सरनागत पालक महा, दान जुद्ध अति धीर।
भोगनाथ नरनाथ यह, पग्यो रहत रस बीर॥

परन्तु सुरनाथ के समान भूमि पर रहने वाले राजा भोग-राज के विषय के इतिहास मौन है। अतः सतसई का समय निर्धारित करना कठिन है। परन्तु उसमें ललित ललाम का मंगलाचरण वाला दोहा तथा रसराज के कई दोहे मिलते हैं, अतः सिद्ध होता है कि इसकी रचना उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों के बाद हुई। भाषा तथा भावों के सुन्दर स्वाभाविक प्रवाह में विद्वान लोग इसको विहारी सतसई से कम नहीं मानते उदाहरण के लिये देखिये—

अरुन सरोरुह कर चरन, दृग खंजन, मुख चन्द।
समय आय सुन्दर सरद, काहि न करत अनन्द॥
—विहारी

पिय आगम सरदागमन, बिमल बाल मुखचचंद।
अंग अमल पानिप भयो, फूले दृग अरविंद॥
—मतिराम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भावोत्कर्ष के साथ ही साथ रूपक का पूर्ण निर्वाह होने के कारण मतिरामजी बिहारी से निश्चय ही आगे बढ़ गये हैं।

(६) साहित्यसार

यह अत्यन्त छोटा १० पृष्ठ का ग्रन्थ है। इसमें भी नायिका भेद का ही वर्णन है। यह सम्भवतः संवत् १७४० में बना होगा।

(७) लक्षण शृङ्गार

भावों और विभावों के विवेचन वाला यह भी एक छोटा ग्रन्थ हैं। यह संवत् १७४५ में बना होगा।

(८) अलंकार पंचाशिका

यह पुस्तक कमायूं के राजा उदोतचंद के पुत्र ज्ञानचंद के लिये संवत् १७४७ में रची गई। राजा उदोत की प्रशंसा में अनेक प्रौढ़ छंद मतिराम जी ने लिखे हैं।

इतने ग्रन्थ होने पर भी मानना पड़ेगा कि मतिरामजी का यश मुख्यतः उनके तीन ही ग्रन्थों पर आश्रित है—रसराज, ललित-ललाम तथा मतिराम सतसई। अतः उनके काव्य की आलोचना विशेषतः इन्हीं तीन ग्रन्थों पर दृष्टि रखकर की जायगी।

मतिरामजी की कविता

मतिराम जी रीति कालीन हिन्दी के कवियों में बहुत ऊँचा स्थान रखते हैं। इनकी कविता शृङ्गार-प्रधान है, और इन्होंने रस के अनुरूप भाषा रख कर अपनी कविता के चार चाँद लगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिये हैं। अपनी काव्यधारा को प्रवाहित करने के हेतु इन्होंने मुख्यत: तीन मार्गों का अनुसरण किया है। रसराज में नायिका-भेद का वर्णन करके स्त्री पुरुष के प्रेम भाव का बड़ा पूर्ण एवं सरस वर्णन किया है। ललित-ललाम में अलंकारों के उदाहरण में अलंकारों के उदाहरण दे देकर इन्होंने रस माधुरी बहाई है और सतसई में छोटे से दोहा छंद में हृदय के मधुर भाव व्यक्त किये हैं।

नायिका-भेद का वर्णन करके इन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि ये शृङ्गार रस की प्रधानता स्वीकार करते हैं। इस रस के आलम्बन विभाव नायक-नायिका ही हैं। अत: मतिरामजी ने भी दिल खोल कर इन्हीं का वर्णन किया है। इनमें भी सवा-चार सौ छन्दों में केवल पैंतीस छन्द नायक-भेद के लिये प्रयुक्त किये गये हैं, बाकी सब नायिका की सुन्दरता, उसकी यौवन प्राप्ति, उसका विवाह, उसकी दाम्पत्य-प्रेम सम्बन्धी लीला आदि का वर्णन है। मतिराम जी ने स्वकीया की अपेक्षा परकीया तथा सामान्या नायिका विषयक छन्द अधिक प्रौढ़ और रमणीय लिखे हैं। कहीं कहीं कुछ अश्लीलत्व भी आ गया है, परन्तु इस संग्रह में ऐसे छन्द नहीं रखे गये हैं।

भाषा में चमत्कार लाने के लिये अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अलंकारों का सोदाहरण वर्णन मतिराम जी ने ललित ललाम में किया है, परन्तु इसमें शब्दालंकारों पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। सम्भवत: मतिराम जी जबर्दस्ती शब्दालं-कारों को घुसेड़ कर, उदाहरण के लिये ही सही, अपनी कविता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को सरस स्वाभाविकता नष्ट नहीं करना चाहते थे। अलंकारों के उदाहरण बड़े उपयुक्त और सरस छन्दों में दिये गये हैं।

देखिये संकोच अलंकार का कैसा सुन्दर उदाहरण मतिराम जी ने दिया है—

ज्यों ज्यों परसै लाल तन, त्यों त्यों राखै गोय।
नवल वधू डर लाज ते, इन्द्रवधू सी होय॥

मतिराम जी की भाषा सर्वत्र शुद्ध ब्रज है। भाषा का जैसा सुन्दर रूप मतिराम जी के काव्य में मिलता है वैसा बहुत कम कवियों के ग्रन्थों में पाया जाता है। सूर, तुलसी, देव, बिहारी कोई भी मतिराम जी से आगे नहीं बढ़ सके हैं। इनकी भाषा में प्रसाद गुण इतना अधिक है कि पाठक को कवि के वांछित अर्थ तक पहुँचने में न देर लगती है न कठिनाई होती है। इनके कुछ वाक्य तो इतने सुगठित और सरस होते हैं कि इनकी लेखनी चूम लेने को जी चाहता है। उदाहरण लीजिये—

१ मान रह्योई नहीं मनमोहन,
मानिनी होय सो मानै मनायो।
२ तैं बरने निज बैननि सों सखि!
मैं निज नैनन सों जनु देखे।
३ कोउ कितेक उपाव करौ कहुँ,
होत हैं आपने पीव पराये।

मतिरामजी की भाषा ने आने आगे वाले लोगों के सम्मुख ऐसा अच्छा नमूना पेश किया है कि बरबस सब का ध्यान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शब्द-चयन की ओर चला गया और शब्दों की भद्दी तोड़ मरोड़ बहुत कुछ बंद हो गई।

इन सब बातों के सिवा, मतिरामजी का विरह-वर्णन भी बड़ा उत्कृष्ट है। सतसई ऐसी उक्तियों का ख़ज़ाना है। उसमें सैकड़ों ऐसे दोहे मिलेंगे जिनकी समानता हिन्दी के कतिपय कवि रत्न ही कर सकते हैं। हाँ, इस विरह वर्णन की शैली पाठकों का ध्यान उर्दू फारसी की एतादृश कविता की ओर अवश्य खींच ले जाती है। नीचे के उदाहरण इस बात की पुष्टि करते हैं।

सखिन करत उपचार अति, परति विपति उत रोज।
झुरसत ओज मनोज के, परस उरोज सरोज॥

विरहाधिक्य में सखियों के उपचार से ताप इतना बढ़ जाता है कि उरोजों में यदि कमल का फूल छुलाया जाता है तो वह झुलस जाता है।

जागत ओज मनोज के, परसि पिया के गात।
पापर होत पुरैनि के, चंदन-पंकिल पात॥

विरहाग्नि के उत्ताप के कारण गाढ़ा चंदन लगे हुए पुरैनि के पत्ते भी जब विरहिणी के अंग पर रखे गये तो वे ऐसे झुलस गये जैसे आग में पापड़ भूने गये हों।

नेत्रों का वर्णन भी मतिरामजी ने बड़ा सुन्दर किया है। बड़े संक्षेप में बड़ी भावपूर्ण उक्तियाँ कह गये हैं। दो तीन उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

१—नेत्रों की सहज श्यामता के विषय में कहते हैं—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कजरारी अँखियान में भूल्यो काजर एक।

अथवा

खोलि के नैनन देखै जो नेक तो
स्याम सरोज पराजय साजै।

२—नेत्रों की विचित्रता कैसी है—

अधमूँदी अँखियन दई मूँदी प्रीति उघार।

और

वेई नैन लागत रुखाई भरे लोगन को,
वेई नैन लागत सनेह भरे नाह को।

३—नेत्रों की अनीति का वर्णन भी कैसा सुन्दर किया गया है—

देखत ही सबके चुरावती हैं चित्तन को,
फेरि कै न देतीं यों अनीति उमड़ाई है।
कवि मतिराम कामतीर हू ते तीछन,
कटाछन की कोरें छेदि छाती में गड़ाई है॥
खंजरीट, कंज, मीन, मृगनि के नैननि की,
छीनि छीनि लेतीं छवि ऐसी तैं लड़ाई है।
तेरी अँखियान में विलोकी यह बड़ी बात,
इते पर बड़ी बड़ी पावती बड़ाई है॥

नेत्रों से प्रसूत आँसुओं पर भी मतिराम जी ने बड़ी मनोरञ्जक और भावपूर्ण उक्तियाँ कही हैं। दो एक देखिये—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिन देखे दुख के चलहिं, देखे सुख के जाहिं।
कहो लाल इन दृगन के, अँसुवा क्यों ठहराहिं ॥
हौं न कहत तुम जानिहौ, लाल बाल की बात।
अँसुवा उडुगन परत हैं, होन चहत उतपात ॥

तारों के टूटने से आँसुओं के टपकने की कैसी सुन्दर समानता कवि ने दिखलाई है।

मतिरामजी का गज-वर्णन भी एक उत्कृष्ट वस्तु है। भावसिंह महाराज के हाथी कितने बड़े थे, वे कैसे सजे थे और महाराज कैसे कैसे हाथियों का दान किया करते थे यह सब मतिराम जी ने बड़ी सुन्दर भाषा में व्यक्त किया है।

हाथियों की विशालता के विषय में एक छन्द लीजिये—

जंग में अंग कठोर महा मद—
नीर झरैं, झरना सरसे हैं।
झूलनि रंग घने मतिराम
महीरुह-फूल-प्रभानि कसे हैं ॥
सुंदर सिंदुर-मंडित कुंभनि,
गैरिक शृङ्ग उतंग लसे हैं।
भाऊ दिवान उदार अपार,
सजीव पहार करी बकसे हैं ॥

इन चलते फिरते पहाड़ों के समान गजराजों की सजावट का भी वर्णन देखिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पावस-भीत वियोगिनी बालनि
यों समुझाय सखी सुख साजैं ।
जोति जवाहिर की मतिराम
नहीं सुरचाप छिनौं छवि छाजैं ॥
दंत लसैं बकपाँति नहीं धुनि
दुंदुभी कीन घने घन गाजैं ।
रीझिकै भाऊ नरिंद दिये
कवि राजनि के गजराज विराजैं ॥

अब देखिये कि कैसे कैसे हाथी महाराज भावसिंह दान में देते थे—

जीतयं जे रावत ऐरावत सों जंग अंग
पुंडरीक के गनत पुंडरीक छन्द हैं ।
वामन-वामन मृदु कुमुद कुमुद गनैं
अंजन के जैतवार अंजन से कद हैं ॥
पुष्पदंत हू के दंत तोरयो ज्यों बहुपसार
छीनि लेत सार्वभौम हू के सदा मद हैं ।
प्रबल प्रतीक सुप्रतीक के जितैया रैया
राव भावसिंह तेरे दान के दुरद हैं ॥

कवि ने इस छन्द में यह दिखलाया है कि महाराज भावसिंह के दान में दिये गये हाथी ऐरावत, पुंडरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदंत, सार्वभौम और सुप्रतीक नामक आठों दिग्गजों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बढ़े चढ़े थे। ऐसे पटुप्रशंसक कवि को गजों का दान दे कर महाराज भावसिंह ने अच्छा ही किया। सम्भवत. जितने हाथी मतिराम जी ने दान में पाये उतने किसी अन्य कवि ने कहीं नहीं पाये होंगे। वास्तव में भारत भूमि में जो आदर मान कवियों को प्राप्त हुआ संसार में दुर्लभ है।

किसी कवि की महत्ता इस बात में भी देखी जाती है कि वह अपने पूर्ववर्ती कवियों को कुछ नवीनता देकर अपना सका है या केवल नकल ही नकल कर रखी है। कारण यह है कि एक दम नये भाव आरम्भ से अंत तक किसी भी कवि में नहीं मिल सकते। स्वयं महाकवि तुलसीदास जी ने हजारों स्थलों पर दूसरों के भाव ग्रहण किये हैं। परन्तु उन्होंने अपने व्यक्तित्व की छाप सर्वत्र डाल दी है और इसीलिये उनके यश को तिल मात्र भी कलंक नहीं लग सका है।

मतिरामजी ने भी बहुत भाव अपने पूर्ववर्ती कवियों से लिये हैं। पर उन्होंने भी कोरी नकल न करके गृहीत भाव में कुछ नवीनता ला दी है। एक दो उदाहरण दे कर यह बात स्पष्ट की जायगी।

पूर्वरूप अलंकार के उदाहरण में देखिये—

केस मुकुत सखि मरकत मनिमय होत।
हाँथ लेत पुनि मुकता करत उदोत॥ तुलसी

मुकुत हार हरि के हिये, मरकत मनियत होत।
पुनि पावत रुचि राधिका, मुख मुसकानि उदोत॥

मतिराम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीताजी के केशों में गुथे मोती और कृष्णजी के गले में पड़े हुए हार के मोती दोनों ही आस पास की गहरी श्यामता के कारण मरकत मणि की भाँति जान पड़ते हैं। परन्तु जब सीता जी अपने मोती हाथ में लेती हैं और जब राधिका जी श्रीकृष्ण जी के समीप बैठ कर हँसती हैं तो दोनों के मोती अपने पूर्व रूप को प्राप्त हो जाते हैं। किस सुन्दरता से मतिरामजी ने तुलसीदासजी के भाव का एक नया उपयोग किया है।

सुभग बिछाय पलंगिया अंग सिंगार।
चितवति चौंकि तरुनियाँ दै दृग द्वार॥

रहीम

सुन्दरि सेज संवारि कै, साजे सबै सिंगार।
दृग कमलनि के द्वार पर बाँधे बदनवार॥

मतिराम

वासक-सज्जा नायिका का वर्णन दोनों ही महाकवियों ने बड़ी ललित भाषा में किया है। परन्तु मतिरामजी के दोहे में बरौनियों की बंदनवार से तुलना करना एक विशेष बात है और इसी उक्ति के कारण मतिराम जी कुछ बढ़ गये हैं।

लाज लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं।
ये मुहजोर तुरंग लौं, ऐंचत हूँ चलि जाहिं॥

बिहारी

मानत लाज लगाम नहि, नेकु न गहत मरोर।
होत लाल लखि बाल के, दृग तुरंग मुंहजोर॥

मतिराम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों दोहों का भाव बिलकुल एक है पर मतिराम जी ने रूपक की रक्षा करके अपने दोहे को विहारी वाले दोहे से कुछ आगे बढ़ा लिया है। विहारी ने 'लौं' का प्रयोग कर रूपक का रूप ही बिगाड़ दिया है।

मतिरामजी की यह विशेषता है कि जहाँ वे पूर्ववर्ती कवियों का भाव लेकर उनसे आगे बढ़ने की चेष्टा करते हैं, वहाँ कोई भी परवर्ती कवि स्वय उनके भावों को लेकर उनसे आगे नहीं बढ़ पाया है। छोटे छोटे कवियों को जाने दीजिये, बड़े बड़े कवि मतिरामजी से आगे नहीं जा सके हैं। यहाँ दो एक उदाहरण देना अनुपयुक्त न होगा।

मतिरामजी का छन्द है—

मानहु पायो है राज कछू
चढ़ि बैठत ऐसे पलाश के खोढे।
गुंज गरे सिर मोर पखा
मतिराम हो गाय चरावत चोढ़े॥
मोतिन को मेरा तोर्यो हरा
गहि हाथन सों रहे चूनरी पोढे।
ऐसेहि डोलत छैल भये तुम्हैं
लाज न आवत कामरी ओढे॥

अब पद्माकरजी का छन्द देखिये—

केसरि रंग महा बरसै सरसै रसरंग अनंग चमू के।
धूम धमारन को पदमाकर छाय अकास अबीर के भूके॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फाग यों लाड़िली की तिहिमैं तुम्हैं लाज न लागत गोप कहूँ के ।
छैल भये छतिया छिरको फिरौ कामरी ओढ़े गुलाल के ढूके ॥

कहना नहीं होगा कि जहाँ मतिरामजी ने एक गोप छैल का चित्र खड़ा कर दिया है वहाँ पद्माकर जी 'धूम धमारन' में ही रह गये हैं।

यों मतिराम भयो हिय में सुख
बाल के बालम सों दृग जोरे ।
ज्यों पट में अति ही चटकीलो
चढ़ै रंग तीसरी बार के बोरे ॥

मतिराम

करि जाय बड़ाई तिती करियो
तब आय सुअङ्ग में रंग मढ़ै ।
बिन ढङ्ग भटू पट हू में जथा
बिनु तीसरे रंग न रंग चढ़ै ॥

तोष

अन्तिम पद में दोनों ही कवि चमत्कार लाये हैं, परन्तु मतिराम में चटकीलापन अधिक है।

ऊपर की हुई संक्षिप्त समीक्षा से स्पष्ट हो गया कि मतिराम जी का स्थान हिन्दी के व्रजभाषा काव्य में अत्यन्त उच्च और गौरवपूर्ण है। मिश्रबन्धु ने ठीक ही इनको हिन्दी के नवरत्नों में गिना है। शृङ्गारी कवियों में इनके मुकाबले के दो कवि व्रज-भाषा में है। एक बिहारी और दूसरे देव। इन दोनों से ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मतिरामजी भाषा-लालित्य में बढ़े हुए हैं। बिहारी ने छोटे से दोहा छन्द में अत्यधिक भाव भरने की चेष्टा की है। परन्तु उन्होंने स्पष्टता की ओर उतना ध्यान नहीं दिया है। अतः उन्हें पाठक की सहायता लेनी पड़ती है और यदि वह उन्हें न मिले तो उनकी भावाभिव्यक्ति कभी सन्तोषजनक नहीं हो सकती। इसी प्रकार देवजी शब्दों को तोड़ मरोड़ कर इतना विकृत कर डालते हैं कि उनको कभी कभी पहिचानना ही कठिन हो जाता है। दो चार को छोड़ दीजिये, अधिकांश में देव के छन्द प्रवाह सुन्दर शब्दावली, तथा संगीत माधुर्य में मतिराम के छन्दों से कहीं पीछे रह जाते हैं। अतः यहाँ कहना पड़ता है कि मतिराम का भूषण जी के साथ सम्बन्ध करके उनके सम्मान को कम करने का जो प्रयत्न मिश्रबन्धुओं की ओर से हुआ है वह प्रशंसा योग्य नहीं है। व्रज भाषा काव्य में मतिराम जी का वही स्थान है जो अंग्रेज़ी कविता में टेनिसन का है। हृदय की सुकुमार अनुभूतियों को कोमल और मधुर भाषा में अभिव्यक्त करने में मतिराम जी अद्वितीय हैं। जब तक काव्य, विशेषतः मधुर, प्रसाद-गुण-युक्त सरस काव्य, के चाहने वाले लोग संसार में रहेंगे तब तक मतिरामजी काव्य प्रेमियों के कंठहार बने रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मतिराम-रत्नावली

भावसिंह बिरुदावली

छप्पय

मुकुट मोर-पर पुञ्ज मंजु सुर धनुष विराजत ।
पीत बसन छन छन नवीन छन छन छवि छाजत ॥
बचन मधुर गंभीर घोष बरषत प्रमोद बर ।
वृंदावन बर बाल बेलि वृंदन विलास कर ॥
मतिराम सकल संताप हर, भावसिंह भूपाल-मन ।
गोविंद नंद-नंदन सुखद, घन सुन्दर आनन्द घन ॥१॥

दोहा

जगत विदित बूंदी नगर, सुख संपति को धाम ।
कलियुग हू में सत्यजुग, तहाँ करत विस्राम ॥२॥
सरद वारिधर से लसत, अमर धौरहर धौल ।
चित्रनि चित्रित शिखर जहँ, इन्द्र-धनुष से नौल ॥३॥
महलनि ऊपर जहँ बने, कंचन कलस अनूप ।
निज प्रभानि सों करत हैं, गगन पीत अनुरूप ॥४॥
वीना बेनु निनाद मृग, मोहि अचल करि चन्द ।
सौध सिखर ऊपर जहाँ, दम्पति करत अनन्द ॥५॥
मरकत लाल प्रवाल मनि, मुकुत हीर अवदात ।
ललित राजपथ में जहाँ, जरकस बसन बिकात ॥६॥

मोर-पर—मोर पंख । वारिधर—मेघ । धौल—श्वेत । सिखर—चोटी । नौल—नवल । सौध—घर । अवदात—निर्मल । जरकस—ज़री के कामवाले ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मद्‌जल बरषत भूमि के, जलधर सम मातंग।
बिना परनि के खग जहाँ, सुन्दर तरल तुरंग ॥७॥
अत्तयवट बालक उदर, ज्यों संसार समाय।
सकल जगत पानिय रह्यो, बूंदी में ठहराय ॥८॥
चन्द्र मुखिन के भौंह जुग, कुटिल कठोर उरोज।
बाननि सों मन कौं जहां, मारत एक मनोज ॥९॥
जहाँ चित्त चोरी करें, मधुर बदन मुसकानि।
रूप ठगत है दृगन कों, और न दूजो जानि ॥१०॥
ता नगरी को प्रभु बड़ो, हाड़ा सुरजन राव।
रच्यो एक सब गुननि को, वर विरंचि समुदाव ॥११॥

कवित्त

(१२)

दान समै गवै धन तृन सों कुबेर हू को,
तनक सुमेरु महादानि ऊँचे मन को।
पृथु सों प्रथित पृथ्वी प्रबल प्रतापवंत,
प्रभु पुरहूत सों प्रगट पूरे पन को ॥
मतिराम कहै वैरी बारन बिदारिवे को,
रूप धरे राजै मृगराज रन बन को।
दुरजन बधू उरजन को सिंगारहर,
ऐसो जसु गावैं सुरजन सुरजन को ॥

पानिप—शोभा। अत्तयवट बालक—प्रलय में वट पत्र पर सोते हुये बाल हरि। विरंचि—ब्रह्मा। प्रथित—स्थिर। पुरहूत—इन्द्र। सुरजन—देववृन्द।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३)

जेते ऐंड़दार दरबार-सरदार सब,
ऊपर प्रताप दिल्लीपति को अभंग भो।
मतिराम कहैं करवार के कसैया केते,
गाड़र से मूड़े जग हाँसी को प्रसंग भो ॥
सुरजन-सुत रजलाज रखवारो एक,
भोज ही तैं साहि को हुकुम-पग पंग भो ॥
मूछनि सों राव मुख लाल रंग देखि मुख,
औरनि को मूछन बिना ही स्याम रंग भो ॥

(१४)

जिगर हथ्यारन हजूर आइबे को न,
हुकुम मान्यों दिल्लीपति आलम पनाह को।
मतिराम कहै दल दक्खिनी समेत,
साहिजहाँ सो हटायो बीर बारिधि उछाह को ॥
भोज को सपूत भयो फौज को सिंगार अति,
ओज को दिनेश दुरजन दिलदाह को।
रावरतनेश कर ओट राख्यो करवार,
करिवार ओट राख्यो कोट पातसाह को ॥

एंड़दार—आनवाले। गाड़र—भेड़। हुकुम-पग—आज्ञारूपी पैर। पंग—पंगु, लंगड़ा। करिवार—तलवार, वार करके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५)

संगर में सिंह सम कीने करिवर सुर,
पुर के निवासी सूर शत्रुन के साथ के।
कहै मतिराम गजगांव दै निवाजि कीने,
सकल निहाल जे गवैया गुनगाय के॥
रावरतनेश के कुमार के सुजस फैलि,
रहे पुहुमी में ज्यों प्रवाह गंगपाथ के।
रीझि-खीझि मौज-फौज दान औ कृपान ऊँचे,
जगत बखानै दोऊ हाथ गोपीनाथ के॥

(१६)

पंडित सुकवि भाट चारनं को गुन,
समुझैया सावधान सदा सुजस विधान में।
कवि मतिराम जाको तेजपुंज-दिनकर,
दुज्जन को दाह कर दस हूँ दिसान में॥
गोपीनाथ नन्द चित चाही बकसीसनि सों,
जाचक धनेस कीने सकल जहान में।
ज्ञान में दिवान शत्रुसाल सुरुगुरु,
साहिबी में सुरपति सुरतरुवर दान में॥

पाथ—जल। संगर—युद्ध। पुहुमी—पृथ्वी। सुरतरुवर—कल्पवृक्ष।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सवैया

(१७)

औरंग दारा जुरे दोउ जुद्ध,
भये भट क्रुद्ध विनोद बिलासी।
मारु बजै मतिराम बखानै,
भई अति अस्त्रन की बरखासी॥
नाथ तनै तेहि ठौर भिर्‌यो,
जिय जानि के छत्रिन को रन कासी।
सीस भयो हर-हार-सुमेरु को,
छता भयो आप सुमेरु को वासी॥

दोहा

सत्रुसाल-सुत सत्य मैं, भावसिंह भूपाल।
एक जगत मैं जगत हैं, सब हिंदुन की ढाल॥१८॥

छप्पय

(१६)

तिमिर तुलित तुरकान प्रवल दिसि बिदिसि प्रगट्टत।
चलत पंथ पथीन धरम श्रुति करम निघट्टत।
लखत न लोचन लोक अवनिपति मोह नींद रस।
धरनि बलय सब करत जानि कलिकाल आप बस।
मतिराम तेज अति जगमगत, भावसिंह भूपाल महँ।
दिनकर दिवान दिन दिन उदित करत सुदिन सब जगत कहँ।

मारू -- युद्ध वाद्य। कासी—काशीपुरी। हरहार सुमेर—शिवजी की माला का मनका। तिमिर—अंधकार। निघट्टत—नष्ट करता हुआ। वलय—मंडल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवित्त

(२०)

परम प्रवीन धीर धरम धुरीन दीन,
बन्धु सदा जाकी परमेसुर मैं मति है।
दुज्जन बिहाल करि जाचक निहाल करि,
जगत में कीरति जगाई जोति अति है॥
राव शत्रुसाल को सपूत पूत भावसिंह,
मतिराम कहै जाहि साहिबी फबति है।
जानपति, दानपति, हाड़ा हिन्दुवानपति,
दिल्लीपति, दलपति बलाबंधपति है॥

(२१)

सत्ता को सपूत भावसिंह भूमिपाल जाकी,
कित्ति जौन्ह करत जनत चितचाव है।
कबिन को मतिराम कामतरू ऐसो कर,
अंगद को ऐसो रन मैं अडोल पाँव है॥
चंद कैसी जोति, चंडकर जैसो तेज पुर—
हूत कैसो पुहुमी में प्रगट प्रभाव है।
अरजुन पन, मुनि मन, धनपति धन,
जगपति तन, मृगपति रन राव है॥

फबति—ऊँचती है। जानपति—ज्ञानपति। बलाबंध पति—हाड़ौती नरेश। कित्ति जौन्ह—कीर्ति कौमुदी। चंडकर—सूर्य। पुरहूत—इन्द्र।

14480.
14449

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२२)

जाकी खीझ भूपति भिखारी से निहारे होत,
　　भूप से भिखारी जाकी रीझ पै सराह की।
नृपति को थप्पन उथप्पन समर्थ शत्रु,
　　साल सुत करै करतूति चितचाह की॥
कहै मतिराम फैली चहूँ चक्क आन,
　　चहुवान-कुल-भानु भावसिंह नरनाह की।
राव सरिवर उमराव कैसे पावैं पात,
　　साह सरि पावैं वलावंध पातसाह की॥

(२३)

दूर भयो अधरम अंधकार अति सब,
　　मुदित निहारि द्विज-चक्कनि को गोत है।
वैरि वधू-बदन कलानिधि मलीन भयो,
　　सकल सुखानौ पर पानिप को सोत है॥
कहै मतिराम राव शत्रुसाल नंदन को,
　　प्रबल प्रतापपुञ्ज आतप उदोत है।
भावसिंह भानु बलावंधु को दिवान तपै,
　　आठऊं पहर दुपहर दिन होत है॥

थप्पन उथप्पन--जमाने और उखाड़ने वाला। सरि—बराबरी।
द्विजचक्कनि—विप्रगण, पक्षीवृन्द। पर--शत्रु।

२६।०।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२४)

बाजत नगारे जहाँ गाजत गयंद तहाँ,
सिंह सम कीनो बीर संगर बिहार हैं।
कहै मतिराम कवि लोगनि कौं रीझि करि,
दीने ते दुरद जे चुवत मदधार हैं॥
शत्रुसाल नन्दराव भावसिंह तेग त्याग,
तोसे और औनितल आज न उदार हैं।
हाथिन बिदारिबे को हाथ हैं हथ्यार तेरे,
दारिद बिदारिबे को हाथियै हथ्यार हैं॥

(२५)

सत्ता को सपूत राव संगर को सिंह सोहै,
जैतवार जगत करेरी किरवान को।
कहै मतिराम अवलंब राजै धरम को,
महोदधि मरजाद मेरु परमान को॥
कीरति की कौमुदी सुछाई छिति छोरनि लौं,
बिमल कलानिधि है कुल चहुवान को।
दानि कल्पद्रुम सुजान मनि भावसिंह,
भानु भूमितल को दिवान हिन्दवान को॥

दुरद—हाथी। औनि—पृथ्वी। जैतवार—जीतने वाले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२६)

जाके कोस भीतर भुवन करतार ऐसो,
जाके नाभिकुण्ड में कमल विकसत है।
कहै मतिराम सब थावर जगम जग,
जाकी दिग्ध उदर दरी मैं दरसत है॥
जाके एक एक रोमकूपनि में कोटिन,
अनन्त ब्रह्मांडनि को वृन्द विलसत है।
राव भावसिंह तेरी कहाँ लौं बड़ाई करौं,
ऐसो बड़ो प्रभु तेरे मन में बसत है॥

(२७)

महाबीर सत्रुसाल नन्द राव भावसिंह,
तेरी धाक अरिपुर जात भय भोय से।
कहै मतिराम तेरे तेज पुंज लिये गुन,
मारुत औ मारतंड मंडल बिलोय से॥
उड़त नवत टूटि फूटि मिटि फाटि जात,
बिकल सुखात वैरी दुखनि समोय से।
तूल से, तिनूका से, तरोवर से, तोयद से,
तारा से, तिमिर से, तमीपति से तोय से॥

दिग्ध—दीर्घ। भयभोप—भय में डूबे हुये। बिलोय—लुप्त। समोय—संयुक्त। तूल—रुई। तोप—जल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२८)

जोरि दल जोरि साहिजादो साहिजहाँ जंग,
जुरि मुरि गयो रही राव में सरम सी।
कहै मतिराम देव मन्दिर बचाये जाके,
बर बसुधा में वेद श्रुति बिधि यों बसी॥
जैसो रजपूत भयो भोज को सपूत हाड़ा,
ऐसो और दूसरो भयो न जग में जसी।
गायनि को बकसी कसाइन की आयु सब,
गायन की आयु सो कसाइन को बकसी॥

(२९)

जानत जहान ऐंड़ करि सुलताननि सों,
कीनो कछवाह कामधुज को बचाव है।
देत मतिराम भाट, चारन, कवि न जैान,
कौन पै गनायो जात गज समुदाय है॥
तेग त्याग सालिम सपूत सत्रुसाल जू की,
खीझैं रनरुद्र रीझैं मौज दरियाव है।
साहनि सों अकसिबो हाथिन को बकसिबो,
राव भावसिंह जू को सहज सुभाव है॥

सालिम—पूरा। अकसिबो—झगड़ा करना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३०)

सूबनि को मेटि दिल्ली देस दलिबे को चमू,
सुभट समूहनि सिवा की उमहति है।
कहै मतिराम ताहि रोकिबे को संगर मैं,
काहू के हिम्मति हिये में उलहति है॥
सत्रुसाल नंद के प्रताप की लपट सब,
गरबी गनीम बरगीन को दहति है।
पति पातसाह की, इज्जति उमरावनि की,
राखी रैयाराव भावसिंह की रहति है॥

(३१)

बड़े बंस अवतंस राव भावसिंह तेरे,
बड़े तेज नये गये देसपति दबि हैं।
कहै मतिराम बड़ी कित्ति उमड़ाई यातैं,
सकल बड़ाई आज तो में रही फबि है॥
सुनिये पुराननि मैं जंबूदीप बड़ो एक,
जंबू तरु जामें फल हाथिन की छबि है।
ताहू ते बड़ो है तेरो कर कामतरु जासों,
बड़े करिबर फल पावत सुकबि हैं॥

गनीम—शत्रु। बरगीन—मराठा सैनिक। कित्ति—कीर्ति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३२)

छीरधि की छबि छिति छोर चार्‌यो ओरनि मैं,
फैलि रह्यो जस कुल ललित-ललाम को।
बखत बिलंद मुख सुन्दर सरदचंद,
देखि करि गरद गुमान होत काम को॥
बाढ़ै पुन्य ओघ अघमरषण आखरनि,
मतिराम करत जगत जप नाम को।
सत्ता के सपूत राजरिषि भावसिंह कीन्हों,
आपुने चरित्तन प्रगट रूप राम को॥

(३३)

बिपिन सरन कै चरन ताकौ राव ही के,
चढ़ौ गिरि पर कै तुरंग पखर मैं।
राखौ परिवार को कि आपनीयै हठ राज-
संपति दै मिलौ कै नगारे दै समर मैं॥
कहै मतिराम रिपुरानी निज नाहनि सों,
बोलैं यो डरानी भावसिंह जू के डर मैं।
बैर तो बढ़ायो कह्यो काहू को न मान्यो अब,
दांतनि तिनूका कै कृपान गहो कर मैं॥

बखत-बिलंद— ऊँचे भाग्य वाला। अघमरषण— पाप नष्ट करनेवाले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३४)

देखि महिपालनि को संपति है ऐसी छाती,
संपति सहित देत जाचकनि दान है।
देत सरनागत नरेसनि अभयदान,
महाबीर वैरिन को देत भयदान है॥
कहै मतिराम दिल्ली पति को बड़ाई देत,
सत्रुसाल नंद बलाबंध सुलतान है।
राव भावसिंह जू को सुजस बखानियत,
लाबे को जहान सब दीबे को दिवान है॥

(३५)

दिन दिन दीने दूनी संपति बढ़त जात,
ऐसो याको कछू कमला को बरबरु है।
हेय हय हाथी हीर बकसि अनूप जिमि,
भूपनि को करत भिखारिन को घरु है॥
कहै मतिराम और जाचक जहान सब,
एक दान सत्रुसाल नंदन को करु है।
राव भावसिंह जू के दान की बड़ाई देखि,
कहा कामधेनु है, कछू न सुर तरु है॥

बरबरू— उत्तम वरदान। कमला—लक्ष्मी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३६)

सागर में गहिराई, मेरु में उँचाई, रति-
नायक में रूप की निकाई निरधारिये।
दान देवतरु में सयान सुरु गुरु में,
प्रसाद गंग नीर में सु कैसे कै विसारिये॥
तरनि में तेज बरनत मतिराम जोति,
जगमगै जामिनी रमन मैं विचारिये।
राव भावसिंह कहा तुम ही बड़े हौ जग,
रावरे के गुन और ठौरहू निहारिये॥

(३७)

विक्रम में विक्रम धरम-सुत धरम मैं,
धुंधमार धीर मैं धनेस वारौं धन मैं।
मतिराम कहत प्रियव्रत प्रताप मैं,
प्रबल बल पृथु, पारथहिं वारौं पन मैं॥
सत्रुसाल नंद रैया राव भावसिंह आजु,
मही के महीप सब वारौं तेरे तन मैं।
नलवारौं नैननि मैं, बलि वारौं बैननि मैं,
भीम वारौं भुजन मैं, करन करन मैं॥

निकाई—शोभा। तरनि सूर्य। जामिनी-रमन—चन्द्रमा। धरम सुत—युधिष्ठिर। धुंधुमार—एक यशस्वी राजा। करन—हाथ, राजा कर्ण।

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३८)

काहू को न बड़ो कुल काहू को न बड़ो भाग,
देखे वर भूमिपाल सकल जहान के।
काहू को न बड़ा हियो, काहू को न बड़ो हाथ,
काहू के न बड़े हाथी सुजस बखान के॥
कहै मतिराम सब राजत अनूप गुन,
राव भावसिंह बलाबंध सुलतान के।
बंस सम बखत, बखत सम ऊँचो मन,
मन सम कर, कर सम करी दान के॥

(३९)

प्रबल बिलद बर बारनि के दतनि सों,
बैरिन के बाँके बाँके दुरद बिदारे हैं।
कहै मतिराम दीने दीरघ दुरद वृन्द,
गुदिर से मेदुर मुदित मतवारे हैं॥
तेग त्याग राजा जगत राव भावसिंह,
मेरे जान तेरे गज याही ते पियारे हैं।
दुर्ज्जनि के दल कवि लोगन के दारिदनि,
नीके करि गजनि की फौजन सों मारे हैं॥

बखत—भाग्य। बर बारनि—उत्तम हाथी। दुरग—गढ़। मुदिर से मेदुर—मेघ से श्याम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सवैया

(४०)

तेज निधाननि मैं रवि ज्यों,
छबिवंतन में बिधु ज्यों छबिछाजै।
सैलन में ज्यों सुमेरु लसै,
बरबृत्तनि में कलपद्रुम साजै॥
देवनि में मतिराम कहै,
मघवा जिमि सोहत सिद्ध समाजै।
राव सता सुत भाऊ दिवान,
जहान के राजनि में इमि राजै॥

(४१)

बारन ते बकसै जिनकी,
समता न लहै बढ़ि बिंध्य समूचो।
कित्तिसुधा दिगभित्ति पखारत,
चंद मरीचिन को करि कूचो॥
राव सता सुत को मतिराम,
महीपति क्योंकरि और पहूँचो।
भूपर भाऊ भुवप्पति को मनसों कर,
और कर सों मन ऊँचो॥

मघवा—इन्द्र। बकसै - दान देता है। सुधा—चूना। दिगि-भित्ति—दिशारूपी दीवालें। कूचो - कूंची।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४२)

सेवत हैं विबुधै मतिराम,
सदा गुरु बैन प्रमान कै मान्यो।
कोप किये सब भूतल के अरि,
भूभृत पच्छनि को गन भान्यो॥
पानिप पूरत बारिद हाथिन,
ताप हर्यो जग में जस ठान्यो।
तैं समुझे पुरहूत के रूपहि,
मैं प्रभु भाऊ दिवान बखान्यो॥

(४३)

भोज बली रतनेस भये,
मतिराम सदा जस चाड़न ही मैं।
नाथ सता समरत्थ दुहूनि
दले अरि तेज सों ताड़न ही मैं॥
भाऊ नरिंद्र के धाक धुके,
अरि जाय गिरे गिरि-गाड़न ही मैं।
जीति महीपति हाड़ नहीं महं
जोति दधीचि के हाड़न ही मैं॥

विबुधै—विद्वान, देवता। गुरु—गुरु, बृहस्पति। भूभृत पच्छ—राजाओं के साथ, पहाड़ों के पक्ष। पुरहूत—इन्द्र। चाड़न—उत्साह से बढ़ाने में। ताड़न—डाँट भर में। गिरि गाड़न—पहाड़, खोह। हाड़ नहीं—हाड़ा लोगों में, हड्डियों में।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवित्त

गजदान वर्णन

(४४)

सजल जलद जिमि झलकत मदजल,
छितितल हलत चलत मंद गति मैं।
कहै मतिराम बल बिक्रम बिहद्द सुनि,
गरजनि परैं दिगवारन बिपति मैं ॥
सत्ता के सपूत भाऊ तेरे दिये हलकनि,
बरनी उँचाई कबिराजनि की मति मैं।
मधुकरकुल करटीनि के कपोलनि तैं,
उड़ि उड़ि पियत अमृत उडुपति मैं ॥

(४५)

मंदर-बिलंद मंद गति के चलैया एक,
पल में दलैया पर दल बलखानि के।
मदजल झरत, झुकत जरकस झूल,
झालरनि झलकत झुंड मुकतानि के ॥
ऐसे गज बकसे दिवान दुहूँ दीनन को,
मतिराम गति बरनै उदार पानि के ॥
फौज के सिंगार हाथी और पहिपालन के,
मौज के सिंगार भावसिंह महादानि के ॥

दिगवारन—दिग्गज। करटीन—हाथियों के। उडुपति—चन्द्रमा। जरकस—ज़रीदार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४६)

जीतयं जे रावत ऐरावत सों जंग अंग,
पुंडरीक के गनत पुंडरीक छद हैं।
बामन बामन मृदु कुमुद कुमुद गनैं,
अजन के जैतवार अंजन के कद हैं॥
पुष्पदंत हू के दंत तोरयो ज्यों पुहुपसार,
छीनि लेत सार्वभौम हू के सदा मद हैं।
प्रबल प्रतीक सुप्रतीक के जितैया रैया,
राव भावसिंह तेरे दान के दुरद हैं॥

(४७)

अंगनि उतंग जंग जैतवार जोर जिन्हैं,
चिक्करत दिक्करि हलत कलकत हैं।
कहै मतिराम सैन सोभा के ललाम अभि-
राम जरकस झूल झाँपे झलकत हैं॥
सत्ता को सपूत राव भावसिंह रीझि देत,
छहूँ रितु छके मदजल छलकत हैं।
मंगन की कहा है मतंगनि के माँनिबे को,
मनसबदारन के मन ललकत हैं॥

ऐरावत, पुंडरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदंत, सार्वमोम, सुप्रतीक ये आठों दिग्गजों के नाम है। छद—पत्र। प्रतीक—प्रतिद्वन्द्वी। दिक्करि—दिग्गज। ललकत—ललचाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४८)

जीते जोर जंग अति, अतुल उतंग मन,
दूनी स्याम रंग छवि छपदनि छाये तैं ।
कहै मतिराम नभ नदी के कुसुम सम,
उड़ैं उड़गन संुड अनिल उड़ाये तैं ॥
मद जल धार बरषत जिमि धाराधर,
धक्कनि सों धुक्करैं धरनिधर धाये तैं ।
आवैं कबिराज ऐसे पावैं गजराज राव,
भाव सता सुत सौं अगार गुन गाये तैं ॥

सवैया

(४९)

जंग में अंग कठोर महां,
मदनीर झरै झरना सरसे हैं ।
झूलनि रंग घने मतिराम,
महीरुह फूल प्रभा निकसे हैं ॥
सुन्दर सिंदुर मंडित कुंभनि,
गैरिक शृंग उतंग लसे हैं ।
भाऊ दिवान उदार अपार,
सजीव पहार करी बकसे हैं ॥

छपदनि—भौंरे । धाराधर—मेघ । धरनिधर—शेष । धुक्करैं—कसमसाते हैं । गैरिक--गेरु । महीरुह—वृक्ष ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५०)

पावस-भीति वियोगिनी बालनि,
यों समुझाय सखी सुख साजैं।
जोति जवाहिर की मतिराम,
नहीं सुरचाप छिनौछवि छाजैं॥
दंत लसैं बकपाँति नहीं,
धुनि दुंदुभी की न घने घन गाजैं।
रीझि कै भाऊ नरिंद दिये,
कविराजन के गजराज विराजैं॥

(५१)

और सकै कहि को मतिराम,
सतासुत के बरने गुन बानी।
राव सही दरियाव जहान को,
आय जहाँ ठहरात है पानी॥
काम-तरोवर, धेनु औ पारस,
नैकु न मंगन के मन मानी।
दारिद-दैत्य बिदारिबे को,
भई भाऊ दिवान की रीझि दिवानी॥

पावस भीति--वर्षा से डरी हुई। बक--बगुले। पानी--जल, आब।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आशीर्वाद

(५२)

जब लगि कच्छप कोल सहसमुख धरनि भार धर ।
जब लगि आठों दिसनि दिग्ध सोभित दिग्गजबर ॥
जब लगि कवि मतिराम सगिरि सागर महि मंडल ।
अनिल अनल जब लग्गि, जोति मंडल आखंडल ॥
नृप सत्रुसाल नंदन नवल, भावसिंह भूपालमनि ।
जग चिरंजीव तव लगि सुखद, कहत सकल संसार धनि ॥

कवित्त

(५३)

चित्त में बिलोकत ही लाल को बदन बाल,
जीते जेहि कोटिचंद सरद, पुनीत के ।
मुसकात अमल कपोलनि के रुचि वृन्द,
चमकैं तर्योननि के रुचिर चुनीन के ॥
पीतम निहार्यो बाँह गहत अचानक ही,
जामैं मतिराम मन सकल मुनीन के ।
गाढ़े गही लाज मैन कंठ ह्वै फिरत बैन,
मूल छ्वै फिरत नैन बारि बरुनीन के ॥

दिग्ध--दीर्घ । आखंडल—इन्द्र । पुनीन—पूर्णिमा के ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५४)

सकल सिंगार साजि, संग लै सहेलिन को,
सुन्दरि मिलन चली आनंद के कंद को।
कवि मतिराम बाल करत मनोरथनि,
पेख्यो परजंक पै न प्यारे नंद-नंद को॥
नेह ते लगी है देह दारुन दहन गेह,
बानक बिलोकि द्रुम बेलिन के वृन्द को।
चंद को हँसत तब आयो मुखचंद अब,
चंद लग्यो हँसन तिया के मुखचंद को॥

(५५)

साँझ ही सिंगार साजि, प्रानप्यारे पास जाति,
बनिता बनक बनी बेलि सी अनन्द की।
कवि मतिराम कलकिंकनी की धुनि बाजै,
मंद मंद चाल ज्यों बिराजति गयंद की॥
केसरि रंगे दुकूल, हाँसी मैं झरत फूल,
केसन में छाई छबि फूलन के वृन्द की।
पाछे पाछे आवति अँध्यारी सी भँवर भीर,
आगे आगे फैलनि उज्यारी मुख चंद की॥

पेख्यो—देखा। बानक—ढंग। किंकिनी—करधनी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५६)

मलै को पवन मंद मंद कै गवन लाग्यो,
फूलन के वृन्दन में मकरंद ढारने ।
कवि मतिराम चित्त चोरे चारो ओर चाहि,
लाग्यो चैत चंद चारु चाँदनी पसारने ॥
अलिन की आली आली मैन के से मन्त्र पढ़ि,
लागी माननीन के मनन मन झारने ।
सुमन सिंगार साजि सेज सुख साज करौ,
लाज करौं आज ब्रजराज पर वारने ॥

(५७)

चरन धरै न भूमि, विहरै तहाँई जहाँ,
फूले फूले फूलनि बिछायो परजंक है ।
भार के डरन सुकुमारि चारु अंगन मैं,
करति न अँगराग कुंकुम को पंक है ॥
कवि मतिराम देखि बातायन बीच आयो,
आतप मलिन होत बदन मयंक है ।
कैसे वह बाल लाल, बाहर बिजन आवै,
बिजन बयारि लागे लचकति लंक है ॥

चाहि—देख कर । वारने—निछावर । वातायन— खिड़की । बिजन—पङ्खा, निर्जन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५८)

पारने सकल एक रोरी ही की आड़ पर,
हा हा न पहिरि आभरन और अंग मैं।
कवि मतिराम जैसे तीच्छन कटाच्छ तेरे,
ऐसे कहाँ सर हैं अनंग के निषंग मैं॥
सहज सरूप सुघराई रीझ्यो मनु मेरो,
लोभि रह्यो देखि रूप अनल तरंग मैं।
सेत सारी ही सों सब सौतैं रंगी स्याम रंग,
सेत सारी ही में स्याम रंगे लाल रंग मैं॥

(५९)

सोने की सी बेली अति सुन्दर नवेली बाल,
ठाढ़ी ही अकेली अलबेली द्वार महियाँ।
मतिराम आँखिन सुधा की बरषा सी भई,
गई तब दीठि वाके मुखचंद पहियाँ॥
नेकु नीरे जाइ करि, बातनि लगाई करि,
कछू मन पाइ करि, आइ गही बहियाँ।
सैन मैं चरचि लई, गौन मैं थकित भई,
नैनन में चाह रही, बैननि में नहियाँ॥

आड़—तिलक। निषंग—तरकस। महियाँ—में। नीरे—निकट।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६०)

सकल सहेलिन के पीछे पीछे डोलति है,
मंद मंद गौन आज हिय को हरतु है।
सनमुख होत सुख होत मतिराम जबै,
पौन लागे घूंघट को पट उघरतु है॥
जमुना के तट, बंसावट के निकट नंद-
लाल पै सकोचनि तैं चाह्यो न परतु है।
तन तो तिया को बर-भाँवरे भरत,
मन साँवरे बदन पर भाँवरे भरतु है॥

(६१)

कहियो सँदेसो प्रानप्यारी सों गवन कीन्हों,
विभ्रम विलास जे वे आपने परस के।
चंद कर बरछीन छेदि छेदि हार्‌यो तीर,
तीच्छन मनोज के कछू करि न सके॥
कवि मतिराम या कुलिस कैसे घाइ कहूँ,
मानत न कोकिल की कूकनि के कसके।
कैसे दरकत, मेरो हियो सदा सहि रह्यो,
तेरे कुच निपट कठोरनि के मसके॥

चाह्यो—देखते। परस—स्पर्श। मनोज—कामदेव। कुलिस—बज्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६२)

वैसेई चितै के मेरे चित्त को चोरावती हौ,
बोलती हौ वैसियै मधुर मृदुबानि सों।
कवि मतिराम अंक भरत मयंक-मुखी,
वैसे ही रहत गहि भुजलतिकानि सों॥
चूमत कपोल, पान करत अधर रस,
वैसियै निहारी रीति सकल कलानि सों।
कहा चतुराई ठानियत प्रानप्यारी तेरो,
मान जानियत रूखी मुख मुसकानि सों॥

(६३)

दूसरे की बात सुनि परत न ऐसी जहाँ,
कोकिल कपोतनि की धुनि सरसाति है।
छाइ रहे जहाँ द्रुम बेलिन सों मिलि मति-
राम अलि कुलनि अँधेरी अधिकाति है॥
तखत से फूलि रहे फूलन के पुंज, घन
कुंजनि मैं होत जहाँ दिनहूँ में राति है।
ता बन की बाट कोऊ संग ना सहेली, कहि
कैसे तू अकेली दधि बेचन को जाति है॥

भुजलतिकानि सों—बाँहों से। अलि कुलनि—भ्रमरवृन्द।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६४)

कानन लौं लागे मुसुकानि प्रेम पागे, लौने
लाज भरे लागे लोल लोचन अनंग ते।
भारु धरि भुजनि डुलावति चलति मंद,
औरैं ओप उलहत उरज उतंग ते॥
मतिराम जोवन पवन की झकोर आय,
बढ़िकै सरस रस तरल तरंग ते।
पानिप अमल की झलक झलकन लागी,
काई सी गई है लरिकाई कढ़ि अंग ते॥

(६५)

लाल कर चरन रदन-छद नखलाल,
मोतिन की गूंदन रही है छबि छाइकै।
कवि मतिराम मुख सुबरन रूप रहि,
रूपखानि मुसुकानि सोभा सरसाइकै॥
आनन कौं इन्दु जान, आँखैं अरबिंद मान,
इन्दिरा रजनि दिन रहति सिहाई कै।
नायक नवल क्यों न देय धन मन ऐसे,
सुतनु कौं सुतनु अतनु धन पाइकै॥

लौने—सलोने, सुन्दर। ओप—शोभा। पानिप—शोभा। रदन-छद—ओंठ। इन्दिरा लक्ष्मी। अतनु-कामदेव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६६)

मेरे हँसे हँसत हैं, मेरे बोले बोलत हैं,
मोही को जानत तन-मन-धन-प्रान री ।
कवि मतिराम भौंहैं टेढ़ी किये हाँसी हू में,
छोड़ देत भूषण वसन खान पान री ॥
मोतें प्रानप्यारी प्रानप्यारे कें न और कोऊ,
तासों रिस कीजै कहाँ को सयान री ।
मैन कामिनी के मेनका हू के न रूप रीझै,
मैं न काहू के सिखाये आनौं मन मान री ॥

(६७)

जमुना के तीर बहै सीतल समीर तहाँ,
मधुकर करत मधुर मंद सोर हैं ।
कवि मतिराम तहाँ छबि सों छबीली बैठी,
अंगन ते फैलत सुगंध के झकोर हैं ॥
पीतम बिहारी की निहारिबे को बाट ऐसी,
चहूँ ओर दीरघ दृगन करी दौर हैं ।
एक ओर मीन मनो, एक ओर कंज-पुंज,
एक ओर खंजन, चकोर एक ओर हैं ॥

मैन-कामिनी—रात । बाट—रास्ता ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६८)

केसरि कनक कहा, चंपक बनक कहा,
दामिनीयो दुरि जात देह की दमक तैं।
कवि मतिराम लौने लोचन लपेट लाज,
अरुन कपोल काम तेज की तमक तैं॥
पग के धरत कल किंकिनी नूपुर बजै,
बिछिया झनक उठै एक ही झमक तैं।
नाह सुख चाहि चित औचक हँसति चौंक,
परै चंदमुखी निज चौका की चमक तैं॥

(६९)

जा दिन ते चलिवे की चरचा चलाई तुम,
ता दिन ते वाके पियराई तन छाई है।
कहै मतिराम छोड़े भूषन, बसन, पान,
सखिन सों खेलनि, हँसनि बिसराई है॥
आई रितु सुरभि, सुहाई प्रीति वाके चित्त,
ऐसे में चलौ तो लाल रावरी बड़ाई है।
सोवत न रैन दिन रोवति रहति बाल,
बूझे ते कहत सुधि माइके की आई है॥

दामिनी—बिजली। दुरि जात—छिप जाती है। चाहि—देख कर। चौका—आगे के चार दाँत। सुरभि—सुगंधवाली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७०)

आयो है सयानपन गयो है अयानमन,
नित उठि मान करिबे की टेक पकरी।
घर घर मानिनी हैं, मानतीं मनाये ते वै,
तेरी ऐसी रीति और काहू मैं न जकरी॥
कवि मतिराम कामरूप घनस्याम लाल,
तेरो नैन कोर ओर चाहैं इकटक री।
हा हा कै निहोरे हू न हेरति हरिन नैनी!
काहे को करति हठ हारिल की लकरी॥

(७१)

पान की कहानी कहा पानी को न पान करै,
आहि कहि उठति अधिक उर आधिकैं।
कवि मतिराम भई बिकल बिहाल बाल,
राधिके जियावरे अनंग अवराधिकैं,
याही को कहायो ब्रजराज दिन चार ही मैं,
करी है उजार ब्रज ऐसी रीति नाधिकैं।
जैसे तुम मोहन! बिलोक्यो वाकी ओर तैसे,
वैरिहू सों वैरी न बिलोकैं वैर साधिकैं॥

जकरी—जकड़ी यानी पक्की हो गई है। हारिल की लकरी—हारिल के विषय में प्रवाद है कि वह जिस लकड़ी को पकड़ लेता है उसे छोड़ता नहीं है। अनंग अवराधि कैं कामदेव की आराधना करके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७२)

बैठे हुते लाल मनमोहन छबीली बाल,
छिनक सकोच राख्यो गुरुजन भीर को।
कवि मतिराम दीठि और की बचाय देखैं,
देखत ही औरे भय राखै अब धीर को॥
तन को न मोह धरै, मन की खबरि भूली,
आँखन में छायो पूर आनंद के नीर को।
उमंगि हिये ते आयो प्रेम को प्रवाह तातैं,
लाज गिरि गई जैसे तरुवर तीर को॥

(७३)

आई है निपट साँझ गैयाँ गईं घर माँझ,
व्हाँ ते दौरि आई मेरो कह्यो कान्ह कीजिये।
हैा तो हैा अकेली और दूसरो न देखियत,
बन की अंधेरी में अधिक भय कीजिये॥
कवि मतिराम मनमोहन सों पुनि पुनि,
राधिका कहत बात साँची यै पतीजिये।
कब की हौं हेरति, न हेरे हारि! पावति हौं,
बछरा हिरानो सो हिराय नैंक दीजिये॥

छिनक—एक क्षण। हिराय- ढूँढ़वा दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७४)

याही को पठाई भलो काम करि आई बड़ी,
तेरी ये बड़ाई लखे लोचन लजीले सों।
साँची क्यों न कहै कछु मोकों किधौं आपही कों,
पाइ बकसीस लाई बसन छबीले सों॥
मतिराम सुकबि सँदेसौ अनुमानियत,
तेरे नख सिख अंग हरष कटीले सों।
तू तौ है रसीली रस-बातन बनाय जानै,
मेरे जान आई रस राखि कै रसीले कों॥

(७५)

सहज सुबास जुत देह की दुगुन दुति,
दामिनी दमक दीप केसरि कनक तैं।
मतिराम सुकवि सरस सुकुमार अंग,
सोहत सिंगार चारु जोबन बनक तैं॥
सोयबे सेज चली प्रानपति प्यारे पास,
जगत जुन्हाई जोति हँसन तनक तैं।
चढ़त अटारी गुरु लोगन की लाज प्यारी,
रसना दसन दाबै रसना-झनक तैं॥

पठाई—भेजी। बसन—वस्त्र। जुन्हाई—चन्द्रिका। रसना—किंकिनी, जिह्वा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७६)

अंगन में चंदन चढ़ाय घनसार सेत,
सारी छीर फेन की सी आभा उफनाति है।
राजत रुचिर रुचि मोतिन के आभरन,
कुसुम कलित केस सोभा सरसाति है॥
कवि मतिराम प्रानप्यारे सों मिलन जाति,
करि कै मनोरथनि मृदु मुसकानि है।
होति न लखाई निसिचन्द की उज्यारी मुख,
चंद की उज्यारी तन छाहो छिपि जाति है॥

(७७)

मोहन लला को सुन्यो चलन बिदेस भयो,
बाल मोहनी को चित्त निपट उचाट मैं।
परी तलावेली तन मन मैं छबीली राखै,
छिति पर छिनकु, छिनकु पाँव खाट मैं॥
प्रीतम नयन कुबलयन को चंद घरी,
एक मैं चलैगो मतिराम जेहि बाट मैं।
नागरि नवेली रूप आगरि अकेली रीती,
गागर लै ठाढ़ी भई बाट ही के घाट मैं॥

उफनाति है—बड़े वेग से उफन रही है। तलावेली—छटपटी। छिति—भूमि। कुबलय—नील कमल। रीती—खाली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रस के कवित्त

(७८)

ह्वै कै डहडहे दिन समता के पाये बिन,
सॉंझ सरसिजनि सरमि सिर नायो है।
निसाभरि निसापति करि कै उपाय बिन,
पायें रूप बासर बिरूप ह्वै दिखायो है॥
कहै मतिराम तेरे बदनि बराबरि को,
आदरस बिमल बिरंचि न बनायो है।
दरप न रह्यो ताते दरपन कहियत,
मुकुर परत ताते मुकुर कहायो है॥

(७९)

देखत ही सबके चुरावती हैं चित्तनि कौं,
फेरि कै न देतीं यों अनीति उमड़ाई है।
कवि मतिराम काम तीर हू तें तीछन,
कटाछनि की कोरैं छेदि छाती मैं गड़ाई है॥
खंजरीट कंज मीन मृगनि कै नैननि की,
छीनि छीनि लेतीं छवि ऐसी तैं लड़ाई है।
तेरी ऑंखियान मैं बिलोकी यह बड़ी बात,
एते पर बड़ी बड़ी पावतीं बड़ाई है॥

डहडहे—प्रफुल्लित। आदरस—आदर्श। खंजरीट—खंजन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८०)

जगमगे जोबन अनूप तेरो रूप चाहि,
रति ऐसी रम्भा सी रमा सी बिसराइये ।
देखिबे को प्रानप्यारी पास प्रान प्यारो खरो,
घूंघट उघारि नैंकु वदन दिखाइये ॥
तेरे अँग अँग में मिठाई औ लुनाई भरी,
मतिराम कहत प्रगट यह पाइये ।
नायक के नैननि में नाइये सुधा सो सब,
सौतिन के लोचननि लौन सो लगाइये ॥

(८१)

बानी को बसन कैधौं बात के बिलास डोलै,
कैधौं मुखचंद चारु चंद्रिका प्रकास है ।
कवि मतिराम कैधौं काम को सुजस कै,
पराग पुंज प्रफुलित सुमन सुबास है ॥
नाक नथुनी के गजमोतिन की आभा कैधौं,
देहवंत प्रगटित हिये को हुलास है ।
सीरे करिबे को पियनैन घनसार कैधौं,
बाल के बदन बिलसत मृदुहास है ॥

चाहि—देख कर । सीरे—ठंडा । घनसार—कपूर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८२)

चिन्ता मैं चितै कै सब सुधि बिसरावत है।
मंडल बिमल तेरे मुख द्विजराज को।
सोयबे को साजत सरस परजंक तेरी,
स्याम अंग छबि इन्दीवर की समाज को॥
कवि मतिराम काम बाननि सौं बेध्यो यौं,
जु दुःख भयो सकल समूह सुख साज को।
कहा कहौं लाल तलबेली तलफत परचो,
बाल अलबेली को बियोगी मन लाज को॥

(८३)

मोहन लला कौं मनमोहिनी बिलोकि बाल,
कसि करि राखति है उमगे उमाह कौं।
सखिन की दीठि को बचाय कै निहारति है,
आनंद प्रबाह बीच पावत न थाह कौं॥
कवि मतिराम और सब ही के देखत ही,
ऐसी भाँति देखति छिपावत उछाह कौं।
वे ही नैन रुखे से लगत और लोगनि कौं,
वे ही नैन लागत सनेह भरे नाह कौं॥

द्विजराज – चन्द्रमा। इन्दीवर – कमल। तलबेली — हड़बड़ी। तलफत — तड़पता हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८८)

कुंदन के आँग माँग मोतिन सँवारी सारी,
सोहत किनारी वारो केसरि के रंग की।
कहै मतिराम मनि मंजुल तरौना, छोटी
नथुनी बिराजै गजमुकतन संग की॥
कुसुम कै हार हियो हरति कुसुंभी आँगी,
सकै को बरनि आभा उरज उतंग की।
जोबन जरब महारूप के गरब गति,
मदन के मद मद मोकल मतंग की॥

(८९)

आलस बलित कोरे काजर कलित,
मतिराम वे ललित बहु पानिप धरत हैं।
सारस सरस सोहैं सलज सहास सगरब,
सविलास ह्वै मृगनि निदरत हैं॥
बरुनी सघन बंक तीच्छन तरल बड़े,
लोचन कटाच्छ उर पीर ही करत है।
गाढ़े ह्वै गड़े हैं न निसारे निसरत नैन,
बान से बिसारे न बिसारे बिसरत हैं॥

आँग—अंग। जरब—चोट। मोकल—मस्त। बिसारे—विष-युक्त, भुलाये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८६)

वरज्यो न मानत हौ, बार बार वरज्यो मैं,
कौन काम मेरे इत भौन में न आइये।
लाज को न लेस, जग हाँसी को न डर मन,
हँसत हँसत आन बात न बनाइये॥
कवि मतिराम नित उठि कलकानि करौ,
नित झूँठी सौंहैं करौ, नित बिसराइये।
ताके पग लागो निसि जागि जाके उर लागे,
मेरे पग लागि उर आगि न लगाइये॥

(८७)

साँझ समै मतिराम कामबस बंसीधर,
बंसीवट तट पै बजाई जाय बाँसुरी।
सुमिरि सहेट वृषभानु की कुमारि-उर,
दुख अधिकानो भयो सुख को बिनासुरी॥
सर सों समीर लाग्यो, सूल सी सहेलीं सब,
बिष सों बिनोद लाग्यो बन सो निवासु री।
ताप चढ़ि आयो तन, पीरी परि आई मुख,
आँखिन के ऊपर उमगि आये आँसु री॥

कलकानि—परेशानी। सहेट—मिलने का स्थान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्फुट कवित्त

(८८)

निसि दिन श्रौननि पियूष सों पियत रहैं,
छाय रह्यो नाद बाँसुरी के सुरग्राम को।
तरनि तनूजा तीर बनकुंजबीथिन मैं,
जहाँ तहाँ देखति है रूप छबि धाम को॥
कवि मतिराम होत हाँतो न हिये ते नेक,
सुख प्रेम गात को परस अभिराम को।
ऊधो तुम कहत बिजोग तजि जोग करौ,
जोग तब करैं जो बिजोग होय स्याम को॥

(८९)

किंकिनी कलित कल नूपुर ललित रव,
गौन तेरो देखि कै सकति करि गौन को।
मृदु मुसुकानि मुखचंद चारु चाँदनी सों,
राख्यौ कै उज्यारौ अभिराम द्वार भौन को॥
सहज सुभावनि सों, भौंहन के भावनि सों,
हरति है मति मतिराम मनरौन को।
रूप मद छकी आजु छबि सों छबीली देति,
तिरछी चितौन मैन बरछी सी कौन को॥

तरनि-तनूजा—यमुना। हांतो--ग़ायब।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(९०)

छल सों छबीली को सहेलनि लिवाय करि,
ऊपर अटारी जाय रूप रच्यो ख्याल को।
कवि मतिराम भूषननि की झनक सुनि,
चाय भौ चपल चित रसिक रसाल को॥
अली चली सकल अलीक मिस करि करि,
आवत निहारि करि मदन गोपाल को।
लालन को इन्दु सो बदन अवलोकि,
अरबिद सों बदन कुम्हिलाय गयो बाल को॥

(९१)

केलि कै सकल राति प्रात उठि अंगराति,
नींद भरे लोचन जुगल बिलसत हैं।
लाजनि तें अंगनि दुरावति है बार बार,
खैंचि करि बसन बिहारी बिहँसति है॥
कवि मतिराम आई आलस जम्हाई मुख,
ऐसी मन भावती की छबि सरसत है।
अरुन उदोत मानों सोभा के सरोवर मैं,
सोभामानि सोभा को सरोज बिकसत है॥

चाय—आनन्द। अलीक—झूठा। मिस—बहाना। अरुन उदोत—सूर्योदय के समय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(९२)

मोतें तो कछू न अपराध परयो प्रानप्यारी !
मान करि रही यौं ही काहे को अरस तैं।
लोचन चकोर मेरे सीतल हैं होत तेरे,
अरुन कपोल मुखचन्द के दरस तैं ॥
कहै मतिराम उठि लागु उर मेरे किन,
करत कठोर मन अँसुवा वरस तैं।
कोप तैं कटुक बोल बोलति है तऊ मोकों,
मीठे होत अधर सुधाधर परस तैं ॥

सवैया

(९३)

कुंदन को रंगु फीको लगै,
झलकै अति अंगन चारु गोराई।
आँखिन में अलसानि चितौनि मैं,
मंजु विलासनि की सरसाई ॥
को विनु मोल बिकात नहीं,
मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
ज्यों ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैननि,
त्यों त्यों खरी निकरै सी निकाई ॥

अरस—रसहीनता। नेरे—निकट। खरी—श्रेष्ठ। निकाई—सुन्दरता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(९४)

खेलन चोर मिहीचिनी आजु,
गई हुती पाछिले घास की नाईं।
आली कहा कहौं एक भई,
मतिराम नई यह बात तहाँईं॥
एकहि औन दुरे इक संगहि,
अग सों अंग छुवायो कन्हाई।
कंप छुट्यो, घनस्वेद बढ़्यो,
तनु रोम उठ्यो अँखियाँ भरि आईं॥

(९५)

साथ सखी के नई दुलही को,
भयो हरि को हियो हेरि हिमंचल।
आय गये मतिराम तहाँ घरु,
जानि इकंत अनंद ते चंचल॥
देखत ही नन्दलाल को बाल के,
पूरि रहे अंसुवानि दृगंचल।
बात कही न गई सु रही गहि,
हाथ दुहूँ सों सहेली को अँचल॥

चोर मिहीचनी—आँख मिचौनी। दुरे—छिपे। हिमंचल—हिमाचल के समान अचल और शीतल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(९६)

कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहो,
तित ही जित ही मन भायो।
काहे को सौंहैं हजार करौ तुम,
तो कबहूँ अपराध न ठायो॥
सोवन दीजै न दीजै हमैं दुख,
योंही कहा रसवाद बढ़ायो।
मान रहोई नहीं मनमोहन,
मानिनी होय सो मानै मनायो॥

(९७)

आज कहा तजि बैठी हौ भूषण,
ऐसे हीं अंग कछू अरसीले।
बोलतीं बोल रुखाई लिये,
मतिराम सनेह सने न रसीले॥
क्यों न कहौ दुख प्रानप्रिया!
अंसुवानि रहे भरि नैन लजीले।
कौन तिन्हैं दुख है जिनको,
तुमसे मनभावन छैल छबीले॥

सौंहैं—सौगंध। ठायो—किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(९८)

प्रीतम आये प्रभात प्रिया घर,
राति रमे, रति चिह्न लिये हीं।
बैठि रही पलका पर सुन्दरि,
नैन नवाय के धीर धरे हीं॥
बाँह गहैं मतिराम कहैं न रही
रिस मानिनी के हटके हीं।
बोली न बोल कछू सतराय के,
भौंह चढ़ाय तकी तिरछौंहीं॥

(९९)

क्यों इन आँखिन सों निरसंक ह्वै,
मोहन को तन पानिप पीजै।
नेकु निहारे कलंक लगै,
इहि गाँव बसे कहौ कैसे कै जीजै॥
होत रहै मन यों मतिराम,
कहूँ बन जाय बड़ो तप कीजै।
ह्वै बन माल हिये लगिये,
अरु ह्वै मुरली अधरारस लीजै॥

हटके हीं—बरजने पर। सतराय के—रुष्ट होकर। पानिप—शोभारूपी जल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१००)

सोप सुता कहै गौरि गुसांइनि !
पाँय परौं विनती सुनि लीजै ॥
दीन दयानिधि दासी के ऊपर,
नेक सुचित्त दयारस भीजै ॥
देहि जो ब्याहि उछाह सों साहनै,
मात पिता हू को सो मन कीजै ।
सुन्दर साँवरो नंदकुमार बसै उर,
जो वह सो वर दीजै ॥

(१०१)

लेन गई हुती बागन फूल,
अँध्यारी लखे डर बाढ़्यो महाई ।
रोम उठे, तन कंप छुट्यो,
मतिराम भई श्रम की सरसाई ॥
बेलिन में उरझी अँगिया,
छतियाँ अति कंटक के छत-छाई ।
देह में नेकु सँभार रह्यो नहिं,
ह्याँ तक भाजि मरू करि आई ॥

छतछाई— क्षतविक्षत होगई । मरूकरि — बड़ी कठिनाई से ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१२)

बैठो तिया गुरु लोगन में,
रति ते अति सुन्दर रूप विसेखी।
आयो तहाँ मतिराम सुजान,
मनोभव सों वढ़ि कांति उरेखी॥
लोचन रूप पियोई चहैं,
अरु लाजनि जात नहीं छवि पेखी।
नैन नसाय रही हियमाल मैं,
लाल की मूरति लाल मैं देखी॥

(१०३)

आई हौ पाँय दिवाय महाउर,
कुंजन तें करिकै सुख सैनी।
साँवरे आजु संवारयो है अंजन,
नैननि को लखि लाजति ऐनी॥
बात के बूझति ही मतिराम,
कहा करतीं यह भौंह तनेनी।
मूंदी न राखत प्रीति अली,
यह गूंदी गुपाल के हाथ की बेनी॥

मनोभव—कामदेव। ऐनी—हरिणी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१०४)

अंजन दै निकसै नित नैननि,
मंजन कै अति अंग सँवारै।
रूप गुमान भरी मद में,
पग ही के अँगूठा अनौट सँवारै॥
जोबन के मद सों मतिराम,
भई मतवारिनि लोग निहारै।
जाति चली यहि भाँति गली,
बिथुरी अलकैं अँचरा न सम्हारै॥

(१०५)

मोहन तें कछु द्योसन तें,
मतिराम बढ़्यो अनुराग सुहायो।
बैठी हुती तिय मायके में,
ससुरारि को काहू सँदेस सुनायो॥
नाह के ब्याह की चाह सुनी,
हिय माहिं उछाह नवेली के आयो।
पौढ़ि रही पट ओढ़ि अटा,
दुख को मिस कै सुख बाल छिपायो॥

अनौट—बिछुआ। चाह—खबर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१०६)

बेलिन सों लपटाय रही है,
तमालन की अवली अतिकारी।
कोकिल केकी कपोतन के कुल,
केलि करैं जहँ आनँद भारी॥
सोचि करौ जिन होहु सुखी,
मतिराम प्रवीन सबै नर नारी।
मंजुल बंजुल कुंजन में,
घन पुंज सखी! ससुरारि तिहारी॥

(१०७)

सो मनमोहन होत लट्टू मुख,
जाके भट्टू! विधु की छवि छाजै।
खोलि के नैनन देखै जो नेक,
तो स्याम सरोज पराजय साजै॥
जो बिहँसै मुख सुन्दर तो,
मतिराम बिहान को बारिज लाजै।
बोलै अली मृदु मंजुल बोल,
तो कोकिल बोलनि को मद भाजै॥

बंजुल - बेंत। बिधु—चन्द्रमा। स्याम-सरोज पराजय साजै—नील कमल को हरादे। बिहान को बारिज—प्रातःकालीन प्रफुल्लित कमल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१०८)

बार कितेक सहेलिन के कहें,
कैसेहुँ लेत न बीरी सँवारी।
राखति रोकि कहै मतिराम,
चलैं अँसुवा अँखियान ते भारी॥
प्रान पियारो चल्यो जब ते,
तब तैं कछु और ही रीति निहारी।
पीरी जनावति अंगन में,
कहि पीर जनावति काहे न प्यारी॥

(१०९)

ह्वां मिलि मोहन सों मतिराम,
सुकेलि करी अति आनंद वारी।
तेई लता द्रुम देखत दुःख,
चले अँसुवा अँखियान ते भारी॥
आवति हौं जमुना-तट को,
नहिं जान परै बिछुरे गिरधारी।
जानति हौं सखि आवन चाहत,
कुजनि ते कढ़ि कुंजविहारी॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(११०)

आली सिंगारति है हठ सों,
पर लागत अंग सिंगार अंगारो ।
पीरी परी तन में मतिराम,
चलै अँखियान ते नीर पनारो ॥
सोउ नहीं मनभावन नायक,
आवत जो बहुतै धन वारो ।
बार बिलासिनि कौं बिसरै न,
न बिदेस गयो पिय प्रान पियारो ॥

(१११)

लाल तुम्हैं कहुँ और तिया की,
लख्यो अंगिया में लगावत चोवै ।
ता छिन ते मतिराम न खेलत,
बूझे सखीनहुँ सों दुख गोवै ॥
लेखि रही नख सों पग को नख,
सीस नवाय के नीचेहिं जोवै ।
बाल नवेली न रूसनो जानति,
भीतर भौन मसूसनि रोवै ॥

बारबिलासिनी—वेश्या । चोवै—चोवा, सुगंधित द्रव्य । गोवै—छिपाती है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

(११२)

प्रीतम आये प्रभात प्रिया,
मुसुकाय उठी दृग सों दृग जोरे।
आगे ह्वै आदर सों मतिराम,
कहै मृदु बैन सुधारस बोरे॥
ऐसे सयान सुभायन ही सों,
मिलो मनभावन सों मन भोरे।
मान गो जानि सुजान तबै,
अँगिया की तनी न छुटो जब छोरे।

(११३)

रावरे नेह को लाज तजी,
अरु गेह के काज सबै बिसराये।
डारि दियो गुरु लोगन को डर,
गाम चवाई मैं नाम धराये॥
हेत कियो हम जो तो कहा,
तुम तो मतिराम न जी ठहराये।
कोऊ नितेक उपाव करौ,
कहूँ होत हैं आपने पीव पराये॥

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(११४)

गौने की चूनरी वैसिय है,
दुलही अबहीं ते ढिठाई बगारी।
वेऊ मनावन आये हैं आपन,
हाथ सों जात न पाग सँवारी॥
पाँइ परे मतिराम लला,
मनुहारि करी कर जोरि हहारी।
आपही मान्यो मनायो न कान्ह को,
आप ही खात न पान पियारी॥

(११५)

पाँयन आनि परे तो परे रहे,
केती करी मनुहारि न झेली।
मान्यो मनायो न मैं मतिराम,
गुमान में ऐसी भई अलबेली॥
प्यारो गयो दुखमानि कहूँ,
अब कैसे रहूँ यहि रात अकेली।
आप ते ल्याउ मनाय कन्हाई को,
मेरो न लीजियो नाम सहेली॥

मनुहार—खुशामद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(११६)

ठाढ़े भये कर जोरि कै आगे,
अधीन ह्वै पाँयन सीस नवायो।
केती करी विनती मतिराम,
पै मैं न कियो हठ तें मन भायो॥
देखत हीं सिगरी सजनी तुम,
मेरो तो मान महामद छायो।
रूठि गयो उठि प्रानपियारो,
कहा कहिये तुमहूँ न मनायो॥

(११७)

जाके लिये गृहकाज तज्यो न,
सिखी सखियान की सीख सिखाई।
वैर कियो सिगरे व्रजगाम सों,
जाके लिये कुल कानि गँमाई॥
जाके लिये घर बाहर हूँ,
मतिराम रहे हँसि लोग लुगाई।
ता हरि सों हित एकहि बार,
गँवारि मैं तोरत बारि न लाई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(११८)

जाते लही जग बीच बड़ाई मैं,
मेरे वियोग जो होत है छीनो।
मोहिं गिनै मतिराम जो प्रान सों,
मेरे सदा ही रहै जो अधीनो॥
मेरे लिये नित ही उठि कै,
गहनो जु गढ़ाय के लावै नवीनो।
प्रान पियारो सो पाइन लाग्योरी,
मैं हंसि कंठ लगाय न लीनो॥

(११९)

आलिनि को सुख मानिबे कौं,
पिय प्यारे की सेज गई चलि बागै।
छाय रह्यो हियरा दुख सों,
जब देखे न ह्याँ नंदलाल सभागै॥
काहू सों बोल कछू न कह्यो,
मतिराम न चित्त कहूँ अनुरागै।
खेलति खेल सहेलिन में,
पर खेल सहेली को जेल सों लागै॥

सुख मानिबे को— ख़ुश करने के लिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१२०)

केलि के मन्दिर देख्यो न लाल को,
बाल के दाहन अंग दहे हैं।
भौंह चढ़ाय सखी सो लख्यो,
मतिराम कछू न कुबोल कहे हैं॥
भूलि हुलास विलास गये,
दुख ते भरि के अँसुवा उमहे हैं।
ईछन छोरन ते न गिरे मनु,
तीछन छोरन छेदि रहे हैं॥

(१२१)

बीति गई जुग जाम निसा,
मतिराम मिटी तम की सरसाई।
जानति हौं कहुँ और तिया से,
रहे रस में रमि कै रसराई॥
सोचति सेज परी यों नवेली,
सहेली सों जात न बात सुनाई।
चंद चढ़्यो उदयाचल पै,
मुख चंद पै आनि चढ़ी पियराई॥

उमहे—उमड़े। ईछन—नेत्र। जुग जाम—दो पहर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१२२)

बारहिं बार बिलोकति द्वारहिं,
चौंकि परै तिनके खरकेहूँ।
सेज परी मतिराम बिसूरति,
आई अहो अबहीं लखि मैं हूँ॥
संग सखान के खेलत हौ,
अजहूँ रजनी पति के अथयेहूँ।
लालन बेगिहि जाहु घरै,
पुनि बाल न मानिहै पाँय परेहूँ॥

(१२३)

कैयो घरी निसि बीति गई अरु,
मेह चहूँ दिसि आयो उनैहै।
अंग सिंगार कै बैठी है साँवरे,
रावरी बाट बिलोकति ह्वैहै॥
बैठे इहाँ 'मतिराम' रसाल हौ,
रात मनावत ही पुनि जैहै।
जाहु न बेगि तिहारी पियारी सु,
दोसु बिहारी हमें पुनि दैहै॥

रजनीपति—चन्द्र। अथये– अस्त होने पर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१२४)

पीतम को धरि ध्यान घरीक,
करै मनही-मन काम किलोलै ।
पातहुँ के खरके 'मतिराम'
अचानक ही अँखियाँ पुनि खोलै ॥
पीतम ऐहैं अजौं सजनी !
अँगराय, जँभाय, घरीक यों बोलै ।
गावै घरीक गरे ही हरे-हरे,
गेह के बाग हरे-हरे डोलै ॥

(१२५)

वारनि धूप अँगारनि धूप कैं,
धूम-अँध्यारी पसारी महा है ।
आनन चन्द समान उगो मृदु,
मन्द हँसी जनों जोन्ह-छटा है ॥
फैली रहीं 'मतिराम' जहाँ-तहाँ,
दीपति दीपनि की परभा है ।
लाल ! तिहारे मिलाप को बाल नें
आज करी दिन में ही निसा है ॥

हरे हरे—धीरे धीरे । वारनि धूपि कै—आग में धूप छोड़ कर उसके यें से बाल सुखाये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१२६)

साँझ ही ते करि राखै सबै,
करिबे के जे काज हुते रजनी के।
पौढ़ी रही उमगी अति ही,
'मतिराम' अनन्द अमात न जी के॥
सोवत जानि कै लोग सबै,
अधिकाने मिलाप मनोरथ पी के।
सेज ते बाल उठी हरुए,
हरुए पट खोल दिए खिरकी के।

(१२७)

आपने हाथ सों देत महावर,
आप ही बार सँवारत नीके।
आपुन ही पहिरावत आनि कै,
हार सँवारि कै मौलसिरी के॥
हौं सखी लाजनि जात मरी,
'मतिराम' सुभाव कहा कहौं पी के।
लोग मिलैं, घर बैरु करैं,
अब हीं ते ये चेरे भये दुलही के॥

हरुये-हरुये—धीरे धीरे। बैरु—निंदा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१२८)

लालन मैं रतिनायक तैं सुभ,
सुन्दरता रति कुंजन पेखी।
बाल में त्यों मतिराम कहै
रति ते अति रूप-कला अवरेखी॥
सामुहि वैठि लखै इक सेज मैं,
वोल अली सुख प्रीति विसेखी।
भाल में तेरे लिखी विधि सो,
यह लाल की मूरति लाल में देखी॥

(१२९)

मो जुग नैन-चकोरन कौं यह,
रावरो रूप सुधा ही को नैवौ।
कीजै कहा कुल कानि तें आनि,
पर्‍यो अब आपनो प्रेम छिपैवौ॥
कुँजनि में 'मतिराम' कहूँ,
निसि घोसहू घात परे मिलि जैवौ।
लाल सयानी सखीन के वीच,
निवारिये ह्यां की गलीन को ऐवौ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३०)

वारन बार सँवारि सिंगारत,
मोतिन हार धरैं तन गोरैं।
पाँइ महावर देत बनाय,
यौं वैनी वनावत नेह निहोरैं॥
यौं रस-लीन रहै नित ही वस,
औरन सो दृग नाहन जोरैं।
लाज गिनैं नहिं लोगन की,
पिय पाँय परे धन देत करोरैं॥

(१३१)

बातन जाय लगाय लई,
रस-ही रस के मन हाथ कै लीनो।
लाल! तिहारे बुलावने को,
'मतिराम' मैं बाल कह्यो परवीनों॥
वेग चलौ न विलंब करौ लखि,
वाल नवेली को नेह नवीनो।
लाज भरी अँखियाँ बिहँसी,
चली बोल कह्यो बिन उत्तर दीनों॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३२)

बैठि रहैं 'मतिराम' लला घर,
भीतर साँझहि तैं अनुरागी।
बानिक सोंवनि चारु सिंगारनि,
आई सुहागिनि प्रेम सौं पागी॥
प्यारे कह्यो हँसि आइहि सेजहि,
प्यारी की जोति बिलासन जागी।
नैन नवाय रही मुसकाय कै,
हार हिए को सँवारन लागी॥

(१३३)

गौने के द्योस छसातक वीते न,
चौथी कहा अबहीं चलि आई।
लालन बाल के ता छिन मैं,
'मतिराम' परी मुख पै पियराई॥
तू न बहू को पठाय अली! यह,
देख दुहून की प्रीति सुहाई।
रोए-से, रोचन, माए-से लोचन,
सोए न सोचन रैन बिताई॥

चौथी—एक रीति जिसके अनुसार गौने के बाद पत्नी पिता के यहाँ जाती है। रोचन मोए—लाल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३४)

आये बिदेस तैं प्रान पिया,
'मतिराम' अनन्द बढ़ाय अलेखै।
लोगन सों मिलि आँगन बैठि,
घरी-ही-घरी सिगरो घर पेखै॥
भीतर भौन के द्वार खरी,
सुकुमारि तिया तन-कंप बिसेखै।
घूँघट को पट ओट दिए,
पट-ओट किए पिय कौ मुख देखै॥

(१३५)

चन्दमुखी सजनीन के संग,
हुती पिय अंगन में मनु फेरत।
ताहि समै पिय प्यारे को आवन,
प्यारी सखी कह्यो द्वार तैं टेरत॥
आय गये 'मतिराम' जबै,
तबै देखत नैन अनन्द भये रत।
भौन के भीतर भाजि गई,
हँसि कै हरुवै हरि को फिरि हेरत॥

सिगरो—सब। भौन—घर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३६)

प्रान पियारो मिलो सपने मैं,
परी जब नेसुक नींद निहारैं।
कंत को आगम त्यों ही जगाय,
कह्यो सखी बोल पियूष निचारैं॥
यों 'मतिराम' भयो हिय मैं,
सुख बाल के बालम सों दृग जोरैं।
जैसे मिहीं पट मैं चटकीलो,
चढ़ै रँग तीसरी बार के बोरैं॥

(१३७)

आयो बिलंब बिदेस तैं बालम,
बाल वि-ाग-बिथा बिसराई।
आई तहाँ तिनके सँग है सब,
गाँव की जे जुवती मिलि आई॥
देखत ही 'मतिराम' कहैं,
अँखियान मैं आनन्द की छबि छाई।
लाजन क्यों कर बैन कहैं सु,
कह्यो दुख देहँहि की दुबराई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३८)

भावते को सुनि आगम आनन्द,
अंगन-अंगन में उलह्यो है।
सो हमहूँ सों सखी सों दुराइए,
आली कह्यो यह कौन कह्यो है॥
खैंचि लिए सुख के अँसुआ यह,
क्यों दुरि है जु हियो उमह्यो है।
गाढ़ी भई कर की मुदरी,
अंगिया की तनीन तनाव गह्यो है॥

(१३९)

राति कहूँ रमि कै मनभावन,
आवन प्रात प्रिया-घर कीनौ।
देखत ही मुसकाय उठी चलि,
आगे ह्वै आदर कै पुनि लीनौ॥
मोहन के तन मैं 'मतिराम'
दुकूल सुनील निहारि नवीनौ।
केसरि के रंग सों रंगिकै यह,
पीत यों प्रीतम के कर दीनौ॥

उलह्यो—उल्लसित। गाढ़ी—कसी। दुकूल—वस्त्र।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१४०)

गुच्छनि को अवतंस लसै सिर,
पच्छन अच्छ किरीट बनायो।
पल्लवलाल समेत छरी कर,
पल्लव सों 'मतिराम' सुहायो॥
गुंजनि के उर मंजुल हार,
सुकुंजनि तैं कढ़ि बाहर आयो।
आज को रूप लखै नंदलाल को,
आजहिं नैननि को फल पायो॥

(१४१)

पाँव धरे दुलही जिहि ठौर,
रहै 'मतिराम' तहाँ दृग दीने।
छोड़ि सखान के साथ को खेलिबो,
बैठ रहे घर के रस भीने॥
साँझहिं ते ललकै मन-ही-मन,
लालन यों रस के बस लीने।
लौनी सलौनी के अंगनि नाह सु,
गौने की चूनरी टोने से कीने॥

गुच्छनि को अवतंस—फूलों के गुच्छों का मुकुट।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१४२)

क्यों हू नहीं बिसरै निसि-वासर,
मंद हँसी मुखचन्द उज्यारी।
त्यों ही दिपै अति नेह सौं देह की,
दीप कला सम दीपत न्यारी॥
तेरिय ज्योति जगै हिय-भीतर,
आवत और न नारि-अँध्यारी।
नैनन हूँ, अरु बैनन हूँ,
तन हूँ मन हूँ को तुही अति प्यारी॥

(१४३)

आनन चंद निहारि निहारि,
नहीं तन औ धन-जीवन वारैं।
चारु चितौनि चुभी मतिराम,
हिये मति कौं गहि ताहि निकारैं॥
क्यों करि धौं मुरली मनि कुंडल,
मोरपखा बनमाल बिसारैं।
ते धनि जे ब्रजराज लखैं,
गृह-काज करैं अरु लाज सँभारैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१४४)

आयो बसंत रसाल प्रफुल्लित,
कोकिल बोलनि श्रौनि सोहाई।
भौंरनि को मतिराम किये,
गुन काम प्रसून कमान चढ़ाई॥
रावरो रूप लग्यो मन मैं,
तन में तिय के झलकी तरुनाई।
धीर धरौ अकुलात कहा,
अब तौ बलि बात सबै बनि आई॥

(१४५)

मोर पखानि किरीट बन्यो,
मुकतानि के कुंडल श्रौन बिलासी।
चारु चितौनि चुभी मतिराम,
सो क्यों बिसरै मुसकानि सुधा सी॥
काज कहा सजनी कुलकानि सों,
लोग हसैं सिगरे ब्रजबासी।
मैं तो भई मनमोहन को,
मुखचंद लखे बिन मोल की दासी॥

श्रौनि—कान में।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१४६)

लेन कौं फूल निकुंजन माँझ,
गयो मिलि गोपिन को गन भायो।
नंदलला तिय के हिय में,
मतिराम तहाँ दृगबान खुभायो॥
गेह चलीं सखियाँ सिगरी,
चित सुन्दर साँवरे रूप लुभायो।
आँखिन मूरि कटीले कपोलनि,
कंटक कोमल पाँय चुभायो॥

(१४७)

मोहन को मुखचंद लखे बढ़ि,
आनंद आँखिन ऊपर आवै।
रोम उठै मतिराम कहै,
तन चारु कदंबलता छवि छावै॥
बूझति हौं हित कै सखि तोहिं,
कहा रिस कै यह भौंह चढ़ावै।
मैं तृन सों गन्यो तीनहुँ लोकनि,
तू तृन ओट पहाड़ छिपावै॥

खुभायो—गड़ा दिया। आंखिन…चुभायो—प्रेम से नेत्र भर आये और कपोल में रोमांच हुआ। उसे छिपाने के लिये नायिका ने पैर में काँटा चुभो लिया। मैं तृन…छिपावै—सखी कहती है कि मैं तीनों लोकों को तुच्छ समझती हूँ क्योंकि कोई भी मुझसे भेद छिपा नहीं सकता और तू अपना प्रेम मुझसे छिपाना चाहती है यह तो तिनके से पहाड़ छिपाना है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१४८)

छिति नीर कृसानु समीर अकाश,
ससी रबि होत निरूप धरै।
अरु जागत सोवत हू मतिराम,
सु आपनी जोति प्रकास करै॥
जग ईस अनादि अनंत अपार,
वहै सब ठौरनि में बिहरै।
सिगरे त्न मोह मैं मोहि रहे,
तृन ओट पहार न देखि परै॥

(१४९)

ऐसी करी करतूति बस्ताय ल्यों,
नीकी बड़ाई लहौ जग जातैं।
आई नई तरुनाई तिहारी ही,
ऐसे छके चितवौं दिन रातैं॥
लीजिये दान हौं दीजिये जान,
तिहारी सबै हम जानती घातैं।
जानौ हमैं जनि वे वनिता,
जिन सों तुम ऐसी करो वलि बातैं॥

तृन ओट पहार न देखि परै — मोह के कारण स्पष्ट बात भी नज़र नहीं आती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५०).

मान कियो सपने में सुहागिनि,
भौंहैं चढ़ीं मतिराम रिसौंहैं।
बातैं बनाय मनाय लई,
मनभावन कंठ लगाय हंसौहैं॥
एते अचानक जागि परी,
सुख ते अँगिरात उठो अलसौंहैं।
लालन के लखि लोचन लाज ते,
होत न बाल के लोचन सौंहैं॥

(१५१)

दै मृदुपायन जावक को रँग,
नाह को चित्त रँगै रँग जातै।
अंजन दै करौ नैननि मैं सुखमा,
बढ़ि स्याम सरोज प्रभा तैं॥
सोने के भूषण अंग रचौ,
'मतिराम' सबै बस कीबे की घातैं।
यौं ही चलै न सिंगार सुभावहिं,
मैं सखि भूलि कहौ सब बातैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५२)

बातनि जाय लगाय लई रस ही
रस मैं मन हाथ कै लीनौं।
लाल तिहारे बुलावन को 'मतिराम'
मैं बाल कह्यो परबीनौं॥
बेग चलौ न बिलंब करौ लख्यौ,
बाल नवेली को नेह नवीनौं।
लाज भरी अँखियाँ बिहँसी बलि,
बोल कहें बिन उत्तर दीनौं॥

(१५३)

तेरो कह्यो सिगरो मैं कियो,
निसि-द्यौस तप्यो तिहुँ तापनि पाई।
मेरो कह्यो अब तू करि जो सब,
दाह मिटै परिहै सियराई॥
संकर-पायनि मैं लगि रे मन,
थोरे ही बातनि सिद्धि सुहाई॥
आक-धतूरे के फूल चढ़ाये तें,
रीझत है तिहुँ लोक के साँई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५४)

मेरपखा 'मतिराम' किरीट मैं,
कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर,
कुंडल-डोलनि मैं छबि छाई॥
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि,
को न बिलोकि भयो बसमाई।
वा मुख की मधुराई कहा कहौं,
मीठो लगै अँखियान लुनाई॥

(१५५)

ताहि तै आई अली रति मंदिर,
जाकी लगै रति हूँ परछाँहीं।
आय गयो 'मतिराम' सही जिन,
कोटिन काम कला अवगाँहीं।
देखत ही सगरी ढगरी पकरी,
हँसि कै तिय की पिय बाँहीं॥
लाजनि तैं मति मंद भई,
मुकही मुखचंद मरू करि नाहीं॥

जिनकोटिन···अवगाहीं—कामना के परम पटु। मरू करि—कठिनाई से।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५६)

चन्दमुखी अरविंद की बालनि,
गूँदत रूप अनूप सुधार्यौ ।
काम-सर्यो तहाँ 'मतिराम'
अनंद सौं नंदकुमार पधार्यौ ॥
देखत कंप छुट्यो तिय के तन,
यौं चतुराई को बोल उचार्यौ ।
सीरे सरोज लगे सजनी कर,
काँपत जात न हार सँवार्यौ ॥

(१५७)

जा दिन तैं छबि सौं मुसक्यात,
कहूँ निरखे नंदलाल बिलासी ।
ता दिन तैं मन-ही-मन मैं 'मतिराम'
पियैं मुसक्यानि सुधा-सी ॥
नैकु निमेष न लागत नैन चकी
चितवै तिय देव-तिया-सी ।
चंद्रमुखी न हलै न चलै निरवात
निवास मैं दीप-सिखा-सी ॥

निरवात—जहाँ हवा न हो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५८)

प्रान प्रिया प्रिय आनन्द सौं,
विदरीति रची रति रंग रह्यौम्वै।
काम कलोलनि मैं 'मतिराम'
रही धुनि त्यौं कलि किंकिनी कीह्वै॥
आनन की उजियारी परी,
श्रम बूँद समेत उरोज लखै द्वै।
चंद की चाँदनी के परसे मनौं,
चंद पखान पहार चले च्वै॥

(१५९)

प्यार पगी पगरी पिय की,
घर भीतर आपने सीस सँवारी।
एतें मैं आँगन तैं उठि कैं तहाँ,
आय गयो 'मतिराम' बिहारी॥
देखि उतारन लागी पिया पिय,
सौंहनि सौं बहुर्यौ न उतारी।
नैन नवाय लजाय रही,
उर लाय लई मुसकाय पियारी॥

चंद पखान—चन्द्रकान्त मणि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१६०)

जावक रंग रँगे पद पंकज,
नाह को चित्त रंगे रंगु जातैं।
अंजन दै करि नैनन में,
सुखमा बढ़ि स्याम सरोज प्रभातैं॥
सोने के भूषण अंग रचे,
मतिराम सबै वस कीबे की बातैं।
यों ही चलै न सिंगार सुभावहि,
मैं सखि भूलि कही सब बातैं॥

(१६१)

गौने के घोस सिंगारन को,
मतिराम सहेलिन को गन आयो।
कंचन के बिछुवा पहिरावत,
प्यारी सखी परिहास बढ़ायो॥
"पीतम स्रौन समीप सदा बजैं"
यों कहि के पहिले पहिरायो।
कामिनि कौल चलावन को,
कर ऊँचो कियो पै चलो न चलायो॥

जावक—महावर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१६२)

गहि हाथ सों हाथ सहेली के साथ मैं,
आवत ही वृषभानु लली।
मतिराम सुबास तें आवत नीरे,
निवारत भौंरन की अवली॥
लखि कै मनमोहन को सकुची,
करयो चाहत आपनी ओट अली।
चित चोरि लियो दृग जोरि तिया,
मुख मोरि कछू मुसकाय चली॥

(१६३)

देखत ही मतिराम रसाल,
गही मति प्यारी की प्रेम न गाढ़ी।
चाहिबे की चित चाह भई,
हिय ते कुलकानि न जात है काढ़ी॥
संग सखीन को जानि दुरावति,
आनन आनँद की रुचि बाढ़ी।
पाइ परे पग सैन मरू कै,
भई मिस लाजन के फिर ठाढ़ी॥

आवत हो—आती थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१६४)

किंकिनि नेवर की झनकारनि,
चारु पसारि महारस जालहिं।
काम कलोलनि मैं मतिराम,
कलानि निहाल कियो नंद लालहिं॥
स्वेद के बुंद लसैं तन मैं रति,
अंतर ही लपटाय गोपालहिं।
मानौ फली मुकता फल पुंजन,
हेमलता लपटानी तमालहिं॥

(१६५)

साँझहि तैं चलि आवत जात,
जहाँ-तहाँ लोगनि हूँ न डरौंगी।
प्रीतम सौं रति ही यह रूप धौं,
ह्वैहै कहा जब अंक भरौंगी॥
जानति हौ 'मतिराम' तऊ,
चतुराई की बात नहीं उचरौंगी।
किंकिनि को उर हार किए,
कहि कौन सौं जाय विहार करौंगी॥

जालहि—वृन्द को। हेम - सुवर्ण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१६६)

लालन बाल कै द्वै ही दिना तैं,
परी मन आनि सनेह की फाँसी।
काम कलोलनि मैं 'मतिराम'
लगै मनौं बाँटन मोद की आँसी॥
पीतम के उर बीच चुभ्यो,
दुलही के बिलास मनोज की गाँसी।
स्वेद बढ़्यो तन कंप उरोजनि,
आँखिन आँसू कपोलनि हाँसी॥

(१६७)

फूलि रहे द्रुम बेलिन सौं मिलि,
पूरि रहीं अँखियाँ रतनारी।
मोहि अकेलि बिलोकि यहाँ,
कछू और ही सी भई दीठि तिहारी॥
जैसी हुती हम सौं तुमसौं अब,
होयगी ऐसिए प्रीति निहारी।
चाहत जो चित सौं हित तौ जिन,
बोलिए कुंजन बीच बिहारी॥

लगै···आँसी—मानो आनन्द का बायन बटने लगा। रतनारी—लाल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१८)

मानहु आयो है राज कछू,
चढ़ि बैठे हो ऐसे पलास के खोढ़े।
गूँज गरे सिर मोर पखा,
मतिराम हो गाय चरावत चोढ़े॥
मोतिन को मेरो तोर्‌यो हरा,
गहि हाथन सौं रहे चूनरी पोढ़े।
ऐसे ही डोलत छैल भए,
तुम्हें लाज न आवत कामरी ओढ़े॥

(१६९)

मंद गयंद कि चाल चले कटि,
किंकिनि नेवर की धुनि बाजै।
मोती के हारनि सौं हियरो,
हरि जू के विलास हुलासनि साजै॥
सारी सुही 'मतिराम' लसै,
मुख संग किनारी की यों छबि छाजै।
पूरन चन्द पियूष मयूष,
मनो पर वेष की रेख विराजै॥

खोढ़े—कोटर। चोढ़े—उत्साह से। सुही—कासनी रंग की। परवेष—मंडल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१७०)

जैयै अकेली महावन बीच,
तहाँ मतिराम अकेलोइ आवै।
आपने आननचन्द की चाँदनी,
सो पहिलै तन-ताप बुझावै॥
कूल कलिंदी के कुंजल मंजुल,
मीठे अमोल वै बैन सुनावै।
ज्यों हँसि हेरि लियो हियरो हरि,
त्यों हँसि कै हियरे हरि लावै॥

(१७१)

मोर पखा 'मतिराम' किरीट मैं,
कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर,
कुंडल डोलनि मैं छवि छाई॥
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि,
को न बिलोकि भयो बस माई।
वा मुख की मधुराई कहा कहौं!
मीठी लगै अँखियान-लुनाई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१७२)

चाहि तुम्हें 'मतिराम' रसाल,
परी पिय के मन मैं पियराई।
काम के तीच्छन तीरन सों,
भरि भरि तुनीर भयो हियराई॥
तेरे विलोकिवे को उतकंठित,
कंठ लों आय रह्यो जियराई।
नेक परे न मनोज के ओजनि,
सेज सरोजनि मैं सियराई॥

(१७३)

जा छिन तैं 'मतिराम' कहै,
मुसकात कहूँ निरख्यो नँदलालहि।
ता दिन तैं दिन ही दिन छीन बिथा,
बहु बाढ़ी वियोग की बालहि॥
पोंछति है कर सौं किसलै,
गहि बूझति स्याम सरीर गुपालहि।
भोरी भई है मयंकमुखी।
भुज भेटति है भरि अंक तमालहि॥

तुनीर—तरकस।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१७४)

न्योते गये कहुँ नेह बढ़्यो,
मतिराम दुहूँ के लगे दृग गाढ़े।
ऊँचे अटा पर काँधे सहेली के,
ठोढ़ी दिये चितवैं दुख बाढ़े॥
लाल चले सुनि कै घर को,
तिय अंग अनंग की आग सो डाढ़े।
मोहन जू मन माढ़ो करैं,
पग द्वैक चलैं, फिर होत हैं ठाढ़े॥

(१७५)

देखत और तियाहि छबीले कौं,
मान छबीली के नैनन छायौ।
प्रीतम यों चतुराई करी,
मतिराम कछू परिहास बढ़ायौ॥
रीति रची बिपरीत जो प्रीति सों,
ताको कवित्त बनाय सुनायौ।
भूलि गई रिस लाजन ते,
मुसकाय तिया मुख नीचे को नायौ॥

डाढ़े—जले हुए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१७६)

दोऊ अनंद सों आँगन माँझ,
विराजैं असाढ़ की साँझ सुहाई।
प्यारी को बूझत और तिया को,
अचानक नाउँ लियो रसिकाई ॥
आयो उनै मुहुँ मैं हँसी कोपि,
प्रिया सुरचाप सी भौंह चढ़ाई।
आँखिन ते गिरे आँसू के बूंद,
सुहासु गयो उड़ि हंस की नाईं ॥

(१७७)

धुरवानि की धावनि मानो अनंग की,
तुंग धुजा फहरान लगी।
नभ मंडल ह्वै छिति मंडल छ्वै,
छनदा की छटा छहरान लगी ॥
मतिराम समीर लगै लतिका,
बिरही बनिता थहरान लगी।
परदेस में पीव सन्देस न पायो।
पयोद घटा घहरान लगी ॥

सुरचाप—इन्द्र-धनुष। धुरवा—बादल। छनदा—बिजली। छिति—भूमि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१७८)

मोर पखा मतिराम किरीट,
मनोहर मूरति सों मनु लैगो।
कुंडल डोलनि गोल कपोलनि,
बोल सनेह के बीज सों बैगो॥
लाल बिलोचन-कौलन सों,
मुसकाइ इतै अरुझाइ चितैगो।
एक घरी घन से तन सों,
अँखियान घनो घनसार सों दैगो॥

(१७९)

साँझ समय ललना मिलि आई,
खरो जहाँ नन्दलला अलबेलो।
खेलन कौं निसि चाँदनी माँहि,
बनै न मतो 'मतिराम' सुहेलो॥
आपनि आपनि पौरि बताय कै,
बोल कह्यो सिगरीनि नवेलो।
त्यों हँसि कै ब्रजराज कह्यो अब,
आज हमारिहि पौरि में खेलो॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१८०)

नन्दलाल गयो तित ही चलि कै,
जित खेलति बाल अलीगन मैं।
तहाँ आपु ही मूँदे सलोनी के लोचन,
चोर मिहीचनि खेलन मैं॥
दुरिबे को गईं झिगरी सखियाँ,
मतिराम कहैं इतने छिन मैं।
मुसकाय कै राधिका कंठ लगाय,
छिप्यो कहूँ जाय निकुंजन मैं॥

(१८१)

आनन पूरन चन्द लसै,
अरविंद विलास बिलोचन पेखे।
अंबर पीत लसै चपला,
छवि अंबुद मेचक अंग उरेखे॥
काम हूँ तैं 'अभिराम' महा,
'मतिराम' हिए निहचै करि लेखै।
तै बरनै निज बैनन सौं,
सखी मैं निज नैनन सौं जनु देखै॥

दुरिबे—छिपने के लिये। मेचक – श्याम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१८२)

आवत मैं सपने हरि को लखि,
नैसुक बाट सकोचन छोड़ी।
आगे ह्वै आड़े भये मतिराम,
चली सुचि तैं चख लालच बोड़ी॥
ओठनि को रस लेन को मोहन,
मेरी गही कर काँपति ठोड़ी।
और भटू! न भई कछु बात,
गई इतने ही मैं नींद निगोड़ी॥

(१८३)

पूरन चन्द उदोत कियो घन,
फूलि रही बन जाति सुहाई।
भौंरन की अवली कल,
कैरव-कुंजन पुंजन मैं मृदु गाई॥
बाँसुरी ताननि कान के बाननि,
लै 'मतिराम' सबै अकुलाई।
गोपिन गोप कछू न गनै,
अपने-अपने घर तैं उठि धाई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१८४)

केलि की राति अघाने नहीं,
दिन हूँ में लला पुनि घात लगाई।
प्यास लगी कोउ पानी दे जाइयो,
भीतर वैठि कै वात सुनाई॥
जेठी पठाइ गई दुलही,
हँसि हेरि हरे मतिराम बुलाई।
कान्ह के बोल पै कान न दीन्हों,
सो गेह की देहरी पै धरि आई॥

(१८५)

प्रान प्रिया मनभावन संग,
अनंग तरंगनि रंग पसारे।
सारी निसा मतिराम मनोहर,
केलि के पुंज हजार उघारे॥
होत प्रभात चल्यो चहै प्रीतम,
सुन्दरि के हिय में दुख भारे।
चन्द सौ आनन, दीप सी दीपति,
स्याम सरोज से नैन निहारे॥

कान न दीन्हों—ध्यान न दिया। उघारे—दिखाये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१८६)

ऊधो जू सूधो बिचार है धौं,
जु कछू समुझैं हम हूँ व्रजवासी।
मानिहैं जो अनुरूप कहौ,
मतिराम भली यह बात प्रकासी॥
जोग कहाँ मुनि लोगन जोग,
कहाँ अबला-मति है चपला सी।
स्याम कहाँ अभिराम सरूप,
कुरूप कहाँ वह कूबरी दासी॥

(१८७)

मोहन को मुखचंद अली,
निज नैन चकोरन को दरसावै।
लोचन भौंर गोपाल के आपने,
आनन वारिज बीच बसावै॥
तोतें लहैं मतिराम महाछबि,
प्रान पियारे तें तू छबि पावै।
तो सजनी सबके मन भावै,
जो सोन से अंगनि लाल मिलावै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

((१८८)

मृदु बोलत कुंडल डोलत कानन,
कानन कुंजनि ते निकस्यो।
बनमाल बनी मतिराम हिये,
पियरो पट त्यों कटि में बिलस्यो॥
जब ते सिर मोर पखानि धरें,
चित चोरि चितै इत ओर हँस्यो।
तब तें दुरि लाजिकै भाजि गई,
अब लालच नैननि आन बस्यो॥

(१८९)

पाइ इकंत कै बाल सों बालम,
जो रति रूप कला दरसावै।
नाहीं कढ़ै मुख नारि के नाहँ,
जहीं हिय सों हियरो परसावै॥
काम बढ़ौ मतिराम तहीं,
अति लाल बिलासनि को सरसावै।
जोवै, त्रसै, मन मोवै अनंद में,
रोवे, हँसै, रस को बरसावै॥

जोवें—देखती हैं। त्रसें—डरती हैं। मनमोवें अनंद में—मन में आनंद भरती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१९०)

हीरन मोतिन के अवतंसन,
सोने के भूषन की छबि छावै।
हार चमेली के फूलन के,
तिनमें रुचि चंपक की सरसावै॥
अंग के संग ते केसरि रंग की,
अंबर सेत मैं जोति जगावै।
बाल छबीली छिपाये छिपै नहिं,
लाल कहौ अब क्यों करि आवै॥

(१९१)

भौंह कमान कै लोचन बानकै,
लाजनि मारि रहै बिसवासी।
गोल कपोलनि केलि करै,
भयो कुंडल लोल हिंडोल बिलासी॥
कोट किरीट किये मतिराम,
करै चढ़ि मोर पखांनि मवासी।
क्यों मन हाथ करौं सजनी,
बनमाल मैं बैठि भयो बनबासी॥

अवतंस—मुकुट। बिसवासी—विश्वासघाती। मवासी—लुटेरा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोहा

मो मन तम-तोमहि हरौ, राधा को मुख चंद ।
बढ़ै जाहि लखि सिंधु लौं, नंद नँदन आनंद ॥१॥
नागरि नैन कमान सर, करत न ऐसी पीर ।
जैसे करत गँधारि के, दृग-धनुहौं के तीर ॥२॥
गुरुजन दूजे ब्याह को, प्रतिदिन कहत रिसाइ ।
पति की पति राखै बहू, आपुनि बाँझ कहाइ ॥३॥
कत सजनी है अनमनी, अँसुवा भरति ससंक ।
बड़े भाग नंदलाल सों, झूठहुँ लगत कलंक ॥४॥
तेरी औरै भाँति की, दीपसिखा सी देह ।
ज्यों ज्यों दीपति जगमगै, त्यों त्यों बाढ़त नेह ॥५॥
पानिप मैं घर मीन को, कहत सकल संसार ।
दृग मीनन को देखियत, पानिप पारावार ॥६॥
अब हीं सब तुम हेरतीं, हँसि हँसि बातनि पागि ।
मेरे चितवत नेक ही, ब्रज में लागति आगि ॥७॥
प्रान पियारो पग पर्‌यो, तू न लखति यहि ओर ।
ऐसो उर जु कठोर तौ, उचितै उरजु कठोर ॥८॥

तम-तोम—सघन अन्धकार । पति—इज़्ज़त । ससंक—शंका युक्त होकर, डर कर । नेह—प्रेम तेल । पानिप—जल, शोभा । हेरतीं—देखती थीं । उरजु—उरोज, स्तन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लचकौहैं सों लंक उर, उचकौहें सो ऐन ।
बिहँसौहे से बदन मैं, लसत नचौहें नैन ॥९॥
ज्यों ज्यों परसै लाल तन, त्यों त्यों राखति गोइ ।
नवल वधू डर लाज तें, इन्द्रवधू सी होइ ॥१०॥
सूखति है वह सुन्दरी, कनक बेलि अभिराम ।
वाकी तपन मिटै जु रस, बरसो घन घनस्याम ॥११॥
नैन बिसारे बान सों, चली बटाउहि मारि ।
वचन सुधारस सींचि कै, वाँहि जीव दै नारि ॥१२॥
चौंसठि कला विलास जुत, बदन कलानिधि पेखि ।
दुतिया की देखे कला, को दुति या की देखि ॥१३॥
चंदकिरन लागि बाल तन, उठे अंग अति जाग ।
परसत कर दिनकर किरनि, ज्यों दरपन में आगि ॥१४॥
लाल तिहारे संग में, खेले खेल बलाइ ।
मूँदत मेरे नैन हौ, करनि कपूर लगाइ ॥१५॥
निडर बटोही बाट में, ऊखनि लेत उखारि
अरे गरीब गँवार तैं, काहे करत उजारि ॥१६॥
नहिं सुहाइ पर गोत है, गोत आपनो पाइ ।
विदा करी कुल कानि की, नैननि नैन बसाइ ॥१७॥

लंक—कमर । परसै—छूता है । गोइ—छिपाकर । इन्द्रवधू—वीरबहूटी । बिसारे—विष युक्त । बटाउहिं—पथिक को । दुतिया—द्वितीया, इसकी आभा । दिनकर—सूर्य । गोत—गोत्र, परिवार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हियो हिये सों मिलि चल्यो, नैन चले मिलि नैन।
इतै उतै मारी फिरै, लाज कहूँ ठहरै न ॥१८॥
सूखी सुता पटेल की, सूखी ऊखनि पेखि।
अब फूली फूली फिरै, फूली अरहरि देखि ॥१९॥
सुबरन बरन सुबास जुत, सरस दलनि सुकुमार।
ऐसे चंपक को तजै, तैं ही भौंर गँवार ॥२०॥
देखे हूँ बिन देखि हूँ, लगा रहे अति आस।
कैसे हूँ न बुझाति है, ज्यों सपने की प्यास ॥२१॥
नैन मिली, मन हूँ मिली, बातन मिलो बनाइ।
क्यों न मिलावति देह सों, नेहरहचटो लाइ ॥२२॥
लाज छुटी, गेह्यो छुट्यो, सुख सों छुट्यो सनेह।
सखि कहियो वा निठुर सों, रही छूटिबे देह ॥२३॥
मेरे तन के रोम ए, मेरे नहीं निदान।
उठि आदर अगमन करैं, करौ कौन बिधि मान ॥२४॥
दिपै देह दीपति गयो, दीप बयारि बुझाइ।
अंचल ओट किये तऊ, चली नवेली जाइ ॥२५॥
जहाँ तहाँ रितुराज में, फूले किसुक जाल।
मानहु मान मतंग के, अंकुस लोहू लाल ॥२६॥
मान जनावति सबन को, मन न मान को ठाट।
बाल मनावन कों लखै, लाल तिहारी बाट ॥२७॥

रहचटा—बढ़ाना, हौंसा। अगमन—आगे ही आगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतै उतै सचकित चितै, चलै डुलावति बाँह।
डीठि बचाइ सखीन की, छिन इक निरखति छाँह ॥२८॥

सुधा मधुर तेरो अधर, सुन्दर सुमन सुगन्ध।
पीत जीव को बंध यह, बंध जीव को बंध ॥२९॥

मन ते नैननि को चली, नैनन ते मन काज।
द्वै दीपक की छाँह लौं, बीच बिलानी लाज ॥३०॥

निज नीचे को निरखि नित, ऊँचे होत उरोज।
यातें मुख के होत हैं, नीचे नैन सरोज ॥३१॥

अँसुवा बरुनी ह्वै चलत, जल चादर के रूप।
अमल कपोलनि की झलक, झलकति दीप अनूप ॥३२॥

सरदागम पिय आगमन, जगी जोति मुख इन्दु।
अंग अमल पानिप भयो, फूले दृग अरविंदु ॥३३॥

नैन जोरि मुख मोरि हँसि, नैसुक नेह जनाइ।
आगि लेन आई हिये, मेरे गई लगाय ॥३४॥

लसत बूँद अंसुवानि के, बरुनिन छोर उदार।
दृग तुरंग झूलनि मनो, झलकत मुकत सुढार ॥३५॥

बिंदु लसत अँसुवानि के, लाल भये दृग कोर।
देखे बिन पिय चंद मुख, चिनगी चुगत चकोर ॥३६॥

पिय आगम सुनि बाल तन, बाढ़्यो हरख बिलास।
प्रथम बूँद बारिद उटैं, ज्यों बसुमती सुबास ॥३७॥

बंधुजीव—दुपहरिया का फूल। काज—के लिये। बसुमती—भूमि।
बारिद—मेघ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निसि दिन निंदत नंद हैं, छिन छिन सासु रिसाति।
प्रथम भये सुत को बहू, अंकहि लेत लजाति ॥३८॥
परसत ही याको भयो, तन कदंब की माल।
रह्यो कहा परिपगन मैं, क्यों न अंक भरि लाल ॥३९॥
नील नलिन दल सेज मैं, परी सु तनु तनु देह।
लसै कसौटी मैं मनो, तनक कनक की रेह ॥४०॥
मन दै सुनिये लाल यह, कनक तरुनि की बात।
अँसुवा उड़गन गिरत हैं, होन चहत उत्पात ॥४१॥
परिकर पंकज के किये, नैनॉन राज बिलास।
मैन मित्र, मंत्री मिरग, खंजन किये खवास ॥४२॥
गहि कोमलता सरसता, सोनो होइ सुगन्ध।
तबहूँ कबहूँ होइ सखि, तेरे तन को बंधु ॥४३॥
अभिनव जोबन जोति सों, जगमग होत बिलास।
तिय के तन पानिप बढ़ै, पिय के नैननि प्यास ॥४४॥
श्रमजलकन झलकन लगे, अलकनि कलित कपोल।
पलकनि रस छलकन लगे, ललकनि लोचन लोल ॥४५॥
चंचलता तो चखनि की, कही न जाइ बनाइ।
जिन्हैं चाहि चंचल महा, चितौ अचल ह्वै जाइ ॥४६॥
नन्दलाल के रूप पर, रीझि परी इक बारि।
अधमूँदी अँखियन दई, मूँदी प्रीति उघारि ॥४७॥

रेह—रेखा। अलकनि कलित—जिन पर बालों की लट पड़ी हैं। ललकन—ललचाने। चख—नेत्र। चाहि—देखकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिन देखे दुख के चलैं, देखें सुख के जाहिं।
कहौ लाल उन दृगनि के, अँसुवा क्यों ठहराहिं ॥४८॥

सेत बसन में यों लगै, उघरत गोरे गात।
उड़ै आगि ऊपर लगी, ज्यों बिभूति अवदात ॥४९॥

बाँधी दृग डोरानि सों, बैरी बरुनि समाज।
गई तऊ नैनानि तें, निकसि नटी सी लाज ॥५०॥

ढीली बाँहनि सों मिली, बोली कछू न बोल।
सुन्दरि मान जनाइ कै, लियो प्रानपति मोल ॥५१॥

पिय बियोग तिय दृग जलधि, जल तरंग अधिकाइ।
बरुनि मूल बेला परसि, बहुरों बहुरि बिलाइ ॥५२॥

पिय मिलाप के हेत तिय, सजे उछाह सिंगार।
दृग कमलनि के द्वार में, बाँधे बंदनवार ॥५३॥

सखी सलोनी देह में, सजे सिंगार अनेक।
कजरारी अँखियान में, भूल्यो काजर एक ॥५४॥

बाल रही इकटक निरखि, लाल बदन अरविंद।
सियराई अँखियन परी, पियराई मुख इंदु ॥५५॥

मनभावन को भावती, भेंटति रस उतकंठ।
बाँही छुटै न कंठ ते, नाहीं छुटै न कंठ ॥५६॥

बिरी अधर अंजन नयन, मेंहदी पग अरु पानि।
तन कंचन के आभरन, नीठि परत पहिचानि ॥५७॥

बिभूति राख। अवदात—पवित्र। बरुनि—बरौनियाँ। बेला—किनारा। सियराई—शीतलता। नीठि—कठिनाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भौंह कमान कटाच्छ सर, समर भूमि बिच लैन।
लाज तजे हूँ दुहुंनि के, सजल सुभट से नैन ॥५८॥

साँच मदन-जित आजु तुम, रंजत रसिक रसाल।
अनल ज्वाल दृग देखियत, लाल लाल रुचि भाल ॥५९॥

तन आगे को चलत है, मन वाही मग लीन।
सलित सोत में ज्यों चपल, चलत चढ़ाऊ मीन ॥६०॥

मानत लाज लगाम नहिं, नेक न गहत मरोर।
होत तोहि लखि बाल के, दृग तुरंग मुँह-जोर ॥६१॥

बरनत साँच असंग कै, तुमको बेद गुपाल।
हिये हमारे बसत हौ, पीर न पावत लाल ॥६२॥

मेरे दृग बारिद वृथा, बरसत वारि प्रवाह।
उठत न अंकुर नेह को, तो उर ऊसर माह ॥६३॥

पगी प्रेम नदलाल के, हमैं न भावत जोग।
मधुप राजपद पाइकै, भीख न माँगत लोग ॥६४॥

करौ कोटि अपराध तुम, वाके हिये न रोषु।
नाह सनेह समुद्र में, बूड़ि जात सब दोषु ॥६५॥

लाल तिहारे बिरह नित, छीन बाल के अंग।
जानति हौं चाहत दियो, निज सायुज्य अनंग ॥६६॥

मदनजित—कामदेव को जीतने वाले। चढ़ाऊ—चढ़ने वाले। असंग—निर्लिप्त। मधुप—ऊधो, भ्रमर। छीन—चीण। सायुज्य—एकाकार होने वाली मुक्ति। अनंग—कामदेव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्यों सहिहै सुकुमारि वह, पहिलो बिरह गुपाल।
जब वाके चित हित भयो, चलन लगे तब लाल ॥६७॥

पियत रहैं अधरान को, रस अति मधुर अमोल।
तातें मीठे कढ़त हैं, बाल बदन तें बोल ॥६८॥

पिय सिलाप को सुख सखी, कह्यो न जात अनूप।
सौतुक ते। सपनो भयो, सपनो सौतुक रूप ॥६९॥

चित्रहि में जाके लखे, होत अनंत अनंद।
सपनेहूँ कबहूँ सखी, सो मिलि हैं ब्रजचंद ॥७०॥

पाय इकंत निकुंज में, भरी अंक ब्रजनाथ।
रोकन कौं तिय करति पै, कह्यो करत नहि हाथ ॥७१॥

कुच तैं श्रमजलधार चलि, मिलि रोमावलि रंग।
मनो मेरु की तरहटी, भयो सितासित संग ॥७२॥

जौन अंग ढिग ह्वै कढ़ी, छुई छैल की छाँह।
अजहूँ लौं अवलोकिये, पुलक पटलता ताँह ॥७३॥

क्यों न फिरै सब जगत में, करत दिगबिजै मार।
जाके दृग-सामंत हैं, कुवलय जीतनहार ॥७४॥

मन जद्यपि अनुरूप है, तऊ न छूटति संक।
टूटि परै जनि भार ते, निपट पातरी लंक ॥७५॥

तुहि राखी सखि लाल करि, निज उर की बनमाल।
तैं राख्यो करि लाल निज, कंठमाल को लाल ॥७६॥

सौतुक—प्रगट। श्रमजल—पसीना। सितासित—गंगा-यमुना। पटलता—सफ़ेदी। दिगबिजै—दिग्विजय। मार—कामदेव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरी सीख सिखै न सखि, मोसों उठै रिसाय।
सोयो चाहति नींद भरि, सेज अंगार बिछाय ॥७७॥
ध्यान करत नंदलाल को, नए नेह में बाम।
तन बूढ़त रंग पीत में, मन बूड़त रंग स्याम ॥७८॥
प्रथम अरध छोटी लगी, पुनि अति लगी बिसाल।
बामन कैसी देह निसि, भई बाल को लाल ॥७९॥
फूलति कली गुलाब की, सखि यह रूप लखै न।
मनो बुलावति मधुप को, दै चुटकी की सैन ॥८०॥
करति रसोई बाल वह, मग न तिहारे ध्यान।
जरति आगि निज आँगुरी, होत नहीं मन ज्ञान ॥८१॥
चाहत फल तेरो मिलन, निसिबासर वह बाल।
कुच सिव पूजति, नैन जल, बुंद मुकुत मय माल ॥८२॥
सखिन करत उपचार अति, परति बिपति उनरोज।
फुरसत ओज मनोज के, परस उरोज सरोज ॥८३॥
सुनि सुनि गुन सब गोपकनि, समझ्यो सरस सवाद।
कढ़ो अधर की माधुरी, ह्वै मुरली के नाद ॥८४॥
बाल अलप जीवन भई, ग्रीषम सरित सरूप।
अब रस परिपूरन करो, तुम घन स्याम अनूप ॥८५॥
फूली नागरि कमलिनी, उड़िगे मित्र मिलिंद।
आयो मित्र बिदेस तैं, भयो सुदिन आनंद ॥८६॥

पति के आने की आशा में पहिले रात छोटी लगी पर जब वे न आये तो बहुत लम्बी जान पड़ी। ओज—उग्रता। मित्र—सूर्य, नायक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरी भाँवरे साँवरै, रास रसिक रस जान ।
उनहीं में मति भ्रमित है, ह्वै बौंडर को पान ॥८७॥
जाल रंध्र मग ह्वै कढ़ै, तिय तनु दीपति पुंज ।
झिझिया कैसो घट भयो, दिन ही मैं बन कुंज ॥८८॥
सारी लटकति पाट की, बिलसति फुँदी लिलार ।
मनो रूप मन्दिर बंधे, सुन्दर बंदनवार ॥८९॥
छुवत परस्पर हेरि के, राधानंद किसोर ।
सब में वेई होत हैं, चोर मिहचिनी चोर ॥९०॥
छाप तरौना-नखन की, सोवत लगी कपोल ।
मनो मदन की मोहिनी, मूँगा माल अमोल ॥९१॥
राधा के दृग खेल में, मूँदे नंदकुमार ।
करनि लगी दृग कोर सों, भई छेदि उर पार ॥९२॥
बड़वानल से जे लगे, अलिनि करत उपचार ।
मिलत लगे घनस्याम उर, ते अँग ज्यों घनसार ॥९३॥
गई छबीली छूटि वह, छल सों नेह जनाइ ।
कहौ कौन के लै छला, आए लाल छलाइ ॥९४॥

बौंडर को पान—बवंडर में घूमता हुआ पत्ता। झिझिया कैसो घट—बहुत से छेद वाला घड़ा। रन्ध्र—छेद। तरौना—एक कान का गहना। करन लगी—हाथ से लगी हुई। दृग—नेत्र। छला—छल्ला। छलाइ—छल करके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अली चली नवलहि लै, पिय पै साजि सिंगार ।
ज्यों मतंग अड़दार को, लिये जात गड़दार ॥९५॥
जोबन मद गज मंद गति, चली बाल पति गेह ।
पगनि लाज आँदू परी, चढ़्यो महावत नेह ॥९६॥
रोम वली कृपान सों, मार्‍यो सिवहि मनोज ।
ताके भये स्वरूप द्वै, सोहत बाल उरोज ॥९७॥
उमगी उर आनंद की, लहरि छहरि हग राह ।
बूड़ी लाज जहाज लौं, नेह नीर-निधि माहं ॥९८॥
औरै कछु चितवनि चलनि, औरै मृदु मुसकानि ।
औरै कछु सुख देत हैं, सकैं न नैन बखानि ॥९९॥
उदै भयो है जलद तू, जग को जीवनदान ।
मेरो जीवन हरतु है, कौन बैर मन आन ॥१००॥
गुन औगुन को तनकऊ, प्रभु नहिं करत बिचार ।
केतक कुसुम न आदरत, हर सिर धरत कपार ॥१०१॥
निज बल के परिमान तुम, तारे पतित बिसाल ।
कहा भयो जनु हौं तुरत, तुम न खिस्याहु गुपाल ॥१०२॥
बसिबे को निज सरवरनि, सुर जाको ललचाहिं ।
सो मराल बकताल्ल में, पैठन पावत नाहिं ॥१०३॥

अंड़दार—अड़ियल । गँड़दार—हाथी को सोंटे से मार कर ले जाने वाले । आँदू—लंगर, सांकल । जीवन—जल, ज़िन्दगी । सरवरनि—सरोवरों में ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अद्भुत या धन को तिमिर, मो पै कह्यो न जाय।
ज्यों ज्यों मनि गन जगमगत, त्यों त्यों अति अधिकाय ॥१०४॥
तिहि पुरान नव द्वै पढ़े, जिहि जानी यह बात।
जो पुरान सो नव सदा, नव पुरान ह्वै जात ॥१०५॥
देखत दीपति दीप की, देत प्रान अरु देह।
राजत एक पतंग में, बिना कपट को नेह ॥१०६॥
प्रेम लग्यो अगार ह्वै, सीता मन बिन ज्ञान।
देत, अँगूठी राम की, मानिक भो हनुमान ॥१०७॥
होत जगत में सुजन को, दुरजन रोकन हार।
केतक, कमल, गुलाब के, कंटक मय परिहार ॥१०८॥
मंत्रिन के बस जो नृपति, सो न लहत सुख साज।
मनहिं बाँधि हग देत हैं, मनकुमार को राज ॥१०९॥
कपट बचन अपराध तें, निपट अधिक दुखदानि।
जेर अंग में संकु ज्यों, होत बिथा की खानि ॥११०॥
कवि जन कलपद्रुम कहैं, ज्ञानी ज्ञान-समुद्र।
दुरजन के गन कहत हैं, भावसिंह रनरुद्र ॥१११॥
महादानि जाचकन कौं, भाऊ देत तुरंग।
पच्छनि बिगिर बिहंग हैं, सुंडन बिगिर मतंग ॥११२॥

पुरान—पुराना, पुराण,। नव—नौ, नया। परिहार—रोकने वाले, बाड़। मनकुमार—कामदेव। संकु—बर्छी, तीव्र नोक वाला शस्त्र। रनरुद्र—रण में रुद्र के समान भयंकर। बिगिर—विहीन। पच्छ—पंख।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जगत जगत दोऊ भुजा, जग्य रूप के रूप ।
भोग नाथ नर नाथ की, भौंह निहारत रूप ॥११३॥

सुनत सदा गुरु बचन हित, रहत विबुध गन साथ ।
भोगनाथ यह जानियत, सदाभूमि सुरनाथ ॥११४॥

भोगनाथ नरनाथ की, रीझ्यो खीझ अनूप ।
होत भिखारी भूप है, भूप भिखारी रूप ॥११५॥

मदखमत्त मिलिंद गन, गान मुदित गन नाथ ।
सुमिरत कवि मतिराम के, सिद्धि-रिद्धि-निधि हाथ ॥११६॥

अंग ललित सित रंग पट, अंगराग अवतंस ।
हंसबाहिनी कीजिये, बाहन मेरो हंस ॥११७॥

राधामोहन लाल को, जाहि न भावत नेह ।
परियौ मुठी हजार दस, ताकी अँखियन खेह ॥११८॥

तरु ह्वै रह्यो करार को, अब करि कहा करार ।
उर धरि नंदकुमार को, चरन कमल सुकुमार ॥११९॥

मेरी मति में राम हैं, कवि मेरे मतिराम ।
चित मेरो आराम में, चित मेरे आराम ॥१२०॥

रूप—रुपया, स्वरूप । गुरु—वृहस्पति, गुरु । विबुध—विद्वान, देवता । रीझ—प्रसन्नता । खीझ—नाराज़ी । मिलिंद—भौंरे । हंसबाहिनी—सरस्वती । हंस—पक्षी, आत्मा । खेह—धूल । करार—कगार, सन्तोष ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुत को सुनो पुरान य, लोगन कह्यो निहोरि।
चाहि चाह जुत नाह मुस, मुसकानी मुख मोरि ॥१२१॥
नवल नेह में दुहुन की, लखी अपूरब बात।
ज्यों सूखति सब देह है, त्यों पानिप अधिकात ॥१२२॥
नींद, भूख अरु प्यास तजि, करती हौ तन राख।
जलसाईं बिन पूजिहैं, क्यों मन के अभिलाख ॥१२३॥
तेरी मुख-समता करी, साहस करि निरसंक।
धूरि परी अरबिंद-मुख, चंदहिं लग्यो कलंक ॥१२४॥
छपै छपाये अब नहीं, मैं पायो लखि अंक।
नाहिंन जु पै कलंक तो, कैसे बदन ससंक ॥१२५॥
रोस न कर जो तजि चल्यो, जानि अँगार गँवार।
छितिपालन की माल में, तैंही लाल सिंगार ॥१२६॥
जो तैं पहिरै संदरी, सो दुति अधिक उदोत।
तेरे सुबरन रूप तें, रूपौ सुबरन होत ॥१२७॥
कर धरि कांधे कंत के, चलै लटपटी चाल।
थकित करति पथिकन सबनि, थकित पंथ में बाल ॥१२८॥
तरनि-करनि झलमलित मुख, लाली ललित कपोल।
प्यास लगावति दृगनि में, प्यासी बाल अमोल ॥१२९॥

चाहि चाह जुत—प्रेम से देख कर। पानिप—शोभा। जलसाईं—शेषशायी भगवान, कृष्ण। छितिपालन—राजा लोगों की। रूपौ सुबरन—चाँदी भी सोने के समान। तरनि-किरन—सूर्य की किरणें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनिमिख लोचन बाल के, यातें नंदकुमार।
गई मीच परसति पजरि, बिरहानल की झार ॥१३०॥

नखतावलि नख, इन्दु मुख, तनु दुति दीप अनूप।
होति निसा नंदलाल मन, लखे तिहारो रूप ॥१३१॥

बार बार वह गेह ते, वारि वारि लै जाति।
काहे ते बिन बात ही, बाती आजु बुझाति ॥१३२॥

याके मन में जानियत, कोऊ लग्यो सभाग।
कहत गान बिन अरथ को, प्रगट अरथ अनुराग ॥१३३॥

पयनि पर्‌यो लखि प्रानपति, दियो मुगुध तिय रोइ।
कज्जल-छल मन मलिनता, लाये अँसुवाँ धोइ ॥१३४॥

बिछुरत रोवत दुहुन को, सखि यह बात लखै न।
दुख अँसुवा पिय नैन हैं, सुख अँसुवा तिय-नैन ॥१३५॥

रातौ दिन जागति रहै, अगिन लगन की मोहिं।
मो हिय में तू बसत है, आँच न पहुँचति तोहि ॥१३६॥

कौन बसत है कौन में, यों कछु कही परै न।
पिय नैननि तिय नैन हैं, तिय नैननि पिय नैन ॥१३७॥

बंदन तिलक लिलार में, ऐसी मुख छबि होत।
रूप-भौन में जगमगै, मनो दीप की जोति ॥१३८॥

अनिमिख—खुले हुये। पजरि—जल जाना। निसा—रात। कज्जल-छल—काजल के बहाने। बंदन—सिंदूर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेरी मुख-छबि लखि लखै, होत चंद ता तूल ।
कंद खाय के चूसिये, ज्यों रूसे को फूल ॥१३९॥

जब जब चढ़त अटानि दिन, चंदमुखी यह बान ।
तब तब घर घर धरत है, दीप बारि सब गाम ॥१४०

अमल कपोलनि में अरुन, झलकति पीक अनूप ।
उठी मनौं रवि किरन सों, आगि लपट के रूप ॥१४१॥

अंजन जुत अँसुवानि की, धार धसति जुग नैन ।
मनो डोर मख तूल के, बाँधे खंजन नैन ॥१४२॥

सहज बात बूझत कछुक, बिहँसि नवाई ग्रीव ।
तरुन हिये तरुनी दई, नई नेह की नीव ॥१४३॥

दसा हीन राधा भई, सुनिये नंद किसोर ।
दीप-सिखा लौं देखियत, वारि बयारि झकोर ॥१४४॥

अब तेरो बसिबो इहाँ, नाहिन उचित मराल ।
सकल सूखि पानिप गयो, भयो पंकमय ताल ॥१४५॥

उजियारी मुख इन्दु की, परी उरोजनि आनि ।
कहा निहारति मुगुध तिय, पुनि पुनि चंदन जानि ॥१४६॥

दिसि दिसि बिगसति मालती, निसि नियराति निहारि ।
ऐसे अतनु अराम में, भ्रम भ्रम भौंर निवारि ॥१४७॥

तूल—समान । चंद्रमुख देखकर लोगों को रात का भ्रम हो जाता है । धसति—गिरती है । मखतूल—काला रेशम । ग्रीव—गरदन । अतनु-अराम—कामदेव का उद्यान । भ्रम भ्रम भौंर निवारि—अरे भौंरे ! भ्रम को दूर कर भ्रमण कर । रूसे को—अड़ूसे का ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुहूँ अटारिन कै सखी, लखी अपूरब बात ।
उतै इन्दु मुरझात है, इतै कंज कुम्हिलात ॥१४८॥
जिनके सील समान है, साँचे होत सुमित्त ।
नेही चंचल चखनि को, चाह्यो चंचल चित्त ॥१४६॥
बड़वानल से जे लगे, अलिनि करत उपचार ।
मिलत लगे घनस्याम उर, ते अँग जो घनसार ॥१५०॥
पियराई तन में परी, पानिप रह्यो न देह ।
राख्यो नंदकुमार ने, करि कुंवार को मेह ॥१५१॥
जुपै द्वार पै बसत तौ, पथिक जाइ जिन सोइ ।
मेरो घर सूनो इहाँ, चोरन को डर होइ ॥१५२॥
ग्रीषम रितु मैं देखि कै, बन में लगी दँवारि ।
बड़ी अपूरब बात है, मन में जरति गँवारि ॥१५३॥
कोऊ करौ किनेक पै, तजौ न टेक गुपाल ।
निसि औरनि के पग परौ, दिन औरनि के लाल ॥१५४॥
सब सिंगार सुन्दरि सजे, बैठी सेज बिछाइ ।
भयौ द्रौपदी को बसन, बासर नाहिं बिहाइ ॥१५५॥
अबहीं तौ मिलि मोहि सखि, चलत आज ब्रजराज ।
अँसुवनि राखति रोकि तिय, जियहि निकासति लाज ॥१५६॥

करन लगी—हाथों में लगी हुई । चाह्यो—देखा । बड़बानल—समुद्र की भीषण अग्नि । पानिप—आब । मेह—मैव । दँवारि—दावाग्नि । कितेक—कितना भी । द्रौपदी को बसन—बड़ा लंबा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाल तिहारे बिरह तें, माघ मास की राति ।
करि कपूर की कीच सो, सखी समीपहि जाति ॥१५७॥
कहा भयो मेरी हितू, हौ तुम सखी अनेक ।
सपने मिलवत नाथ कै, नींद आपनी एक ॥१५८॥
सपने हू मन-भावतो, करत नहीं अपराध ।
मेरे मन ही मैं रही, सखी मान की साध ॥१५९॥
बाल रही इकटक निरखि, लाल बदन अरबिंदु ।
सियराई अँखियन परी, पियराई मुख इन्दु ॥१६०॥
बिष-मय किधौं पियूषमय, तेरी मृदुमुसकानि ।
यहै मुरछति करति है, यहै जिवावति आनि ॥१६१॥
नयन उमग अनंग की, छुवत अंग अनखाइ ।
तम तन तावति तरुनि, लाइ लगन की लाइ ॥१६२॥
लफत घायल जीव को, कौन जियावत आनि ।
जो न होत उन दृगन में, सुधा मधुर मुसकानि ॥१६३॥

SPS
891.431 S 32 M
14449

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

सपने मिलवत... एक—निद्रा ही एक सखी है जो स्वप्न में मुझे प्रियतम से मिला देती है । मन-भावतो—प्रियतम । साध—अभिलाषा सियराई—शीतलता । तावति—तपाती है । लाइ—अग्नि ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वाध्याय ग्रन्थमाला

१—योगासन और अक्षय युवावस्था

योगासन सम्बन्धी सचित्र प्रामाणिक पुस्तक। इन प्राचीन व्यायामों को करके प्राचीन भारतवासी किस प्रकार अक्षय युवावस्था का भोग करते थे इसमें उसका अच्छा वर्णन है। लेखक स्वामी शिवानन्द सरस्वती। मूल्य १।)

२—प्राणायाम और अनन्त शक्ति

प्राणायाम ही महाबल की कुंजी है। प्राणायाम द्वारा प्राचीनकाल में लोग कैसे अकथनीय बल प्राप्त करते थे उसका इसमें हाल है। सचित्र पुस्तक है। लेखक स्वामी शिवानन्द सरस्वती। मूल्य २॥

३—जपयोग और देवदर्शन

१३॥

जपात् सिद्धिर्न संशयः इस वाक्य को वैज्ञानिक रूप से पुस्तक में सिद्ध किया गया है। जप द्वारा मनुष्य क्या नहीं कर सकता इसका हाल जानना हो तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये लेखक स्वामी शिवानन्द सरस्वती हैं। मूल्य १॥)

४—सन्ध्या योग

सन्ध्या सम्बन्धी पूर्ण साहित्य का संग्रह, वेदों, शास्त्रों, योग तथा वेदान्तादि दर्शनों का निचोड़। गायत्री कैसे कामधेनु है। भक्तों के चमत्कारिक अनुभव पढ़ने योग्य विषय हैं। लेखक—प्रतापनारायण चतुर्वेदी। मूल्य १॥)

पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज—इलाहाबाद।

Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुपम अवसर से लाभ उठाइये

आलोक पुस्तकमाला

सुलभ मूल्य में हिन्दी साहित्य का आनन्द लेना हो तो आलोक पुस्तकमाला की पुस्तकें पढ़िये। पुस्तक माला ४ भागों में विभक्त है। लाल कवर (कहानी, उपन्यास तथा गद्य साहित्य), हरा कवर (हिन्दी कविता), नीला कवर (फुटकल साहित्य) पीला कवर (संस्कृत साहित्य) प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ।॥) है।

१—रसखान रत्नावली
२—भर्तृहरि शतक (तीनों शतक सरल हिन्दी अर्थ सहित)
३—कविवर सोमनाथ की रासपञ्चाध्यायी
४—स्मृति शक्ति
५—रावर्ट क्लाइव
६—पद्माकर रत्नावली
७—घनानन्द रत्नावली
८—सेनापति रत्नावली
९—देव रत्नावली
१०—मतिराम रत्नावली
११—बिहारी सतसई*

---

* छप रही है।

पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE